तापमान

अधिकतम 37 .5 डिग्री
न्यूनतम 24 .8 डिग्री

हरिभूमि

रोहतक भूमि

रोहतक, रविवार, 27 जुलाई 2025

11 28 से 30 तक नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए होगा ..

12 तीज पर्व आज, बाजारों में रौनक, मेहंदी चूड़ी और ...

खबर संक्षेप

अजय शर्मा सह प्रवक्ता तो लोकेश बने भाजपा के जिला सह-मीडिया प्रमुख

रोहतक। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष रणबीर ढाका ने जिला कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए जिले की कुछ नियुक्तियां की है। जिनमें पं. लोकेश शर्मा को जिला सह-मीडिया प्रमुख, अजय शर्मा को जिला प्रवक्ता, राकेश कलसन एवं वेदपाल हुड्डा को जिला सोशल मीडिया सह-प्रमुख, रणवीर सिंह, सुषमा कन्हैली, देवेन्द्र अहलावत, हैप्पी सैनी को जिला आईटी का सह-प्रमुख नियुक्त किया है। लोकेश शर्मा ने जिला सह-प्रमुख बनने पर जिला अध्यक्ष रणवीर सिंह ढ़ाका सहित भाजपा के शीर्ष नेतृत्व का धन्यवाद करते हुए कहा कि संगठन ने जो उनपर भरोसा जताया है उसपर खरे उतरने का पूरा प्रयास करेंगें। लोकेश शर्मा 2013 से गौकर्ण मंडल के मीडिया प्रभारी, उसके बाद जिला सोशल मीडिया प्रभारी, जिला मीडिया प्रभारी युवा मोर्चा के दायित्व पर काम कर चुके हैं।

यशवीर सिंह बने रहेंगे कार्यवाहक सरपंच

महम। खंड महम के भैणीचंद्रपाल गांव में पंच यशवीर सिंह कार्यवाहक सरपंच बने रहेंगे। जिला उपायुक्त ने इस गांव के सरपंच शिवराज सिंह को निलंबित कर दिया था। उसके बाद पंचों ने मिलकर यशवीर पंच को कार्यवाहक सरपंच चुन लिया था। सरपंच शिवराज ने कमिश्नर रोहतक के पास अपील लगाई थी। कमिश्नर ने डीसी के आदेश पर स्टे दे दिया था। अब यशवीर ने हाईकोर्ट की शरण ली है। हाईकोर्ट ने कमिश्नर के आदेश पर स्टे दे दिया। पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में यशवीर की अपील पर सुनवाई की। जिसमें आदेश दिया गया है कि फिलहाल पंच यशवीर सिंह गांव के कार्यवाहक सरपंच बने रहेंगे।

अप्रेंटिसशिप एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम्स में प्रवेश प्रारंभ

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ होटल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट ने सत्र 2025-26 के लिए अप्रेंटिसशिप एम्बेडेड डिग्री प्रोग्राम्स में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। ये कार्यक्रम बीबीए एवं बीबीए में संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें प्रत्येक में 30 सीटें उपलब्ध हैं। दोनों पाठ्यक्रम यूजीसी गाइडलाइन 2025 के अनुसार तैयार किए गए हैं, जिसमें अंतिम दो वर्षों में इंडस्ट्री आधारित सशुल्क अप्रेंटिसशिप अनिवार्य है।पात्रता के लिए 10+2 परीक्षा में न्यूनतम 45% अंक होना आवश्यक है।

20 तक एडमिशन के लिए ऑनलाइन आवेदन

रोहतक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन (सीडीओई) में शैक्षणिक सत्र जुलाई-अगस्त 2025-26 में यूजी, पीजी और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के दूसरे वर्ष (तीसरे व चौथे सेमेस्टर) तथा तीसरे वर्ष (पांचवें व छठे सेमेस्टर) में 20 अगस्त तक बिना विलंब शुल्क के एडमिशन के लिए ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। यह जानकारी सीडीओई निदेशक प्रो. गुलशन लाल तनेजा ने दी है।

रोल नंबर देखते परीक्षार्थी

बस का इतजार करते परीक्षार्थी

जज्बे को सलाम

नोज से पिन निकालती महिला

सख्ती: घड़ी व ईयरफोन उतरवाए, बाइक की चाबी भी रखवाई, परीक्षा की वीडियोग्राफी कराई

कड़ी सुरक्षा के बीच दोनों सत्रों में शांतिपूर्ण व पारदर्शी तरीके से संपन्न हुई सीईटी की परीक्षा, पहले दिन 30826 ने दिया पेपर

- अभ्यार्थियों की सुविधा के लिए जिला प्रशासन द्वारा की गई समुचित व्यवस्था
- परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने के लिए 13 रूटों पर उपलब्ध करवाई गई शटल बस सेवा
- गुरुग्राम व फरीदाबाद जाने के लिए 6 अलग-अलग कलस्टर से संचालित हुई बस सेवा
- झज्जर व भिवानी से आए अभ्यर्थियों के लिए ठहरने का किया गया प्रबंध

रोहतक। वैश्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में परीक्षा के दौरान एडमिट कार्ड चेक करती स्टाफ कर्मचारी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

जिले में पहले दिन दोनों सत्रों की सामान्य पात्रता परीक्षा (सीईटी) शांतिपूर्वक ढंग से संपन्न हो गई। परीक्षा को पारदर्शी तरीके से संपन्न करवाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा समुचित व्यवस्था की गई थी। परीक्षा देने के लिए रोहतक पहुंचे व रोहतक से दूसरे जिलों में गए अभ्यर्थियों को किसी भी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। डीसी धर्मेंद्र सिंह सहित पहले दिन दोनों सत्रों में 30826 ने परीक्षा दी। परीक्षा केंद्रों पर भारी तादाद में महिला कर्मचारियों सहित पुलिस बल तैनात रहा। चेकिंग के दौरान कडे, बाली, घड़ी, वाहनों और मकान की चाबी, ईयरफोन उतरवा लिए गए। हाथों की कलाई पर बंधे हुए धागे भी उतारने के लिए कहा गया। परीक्षा केंद्र में केवल रोल नम्बर और एक आईडी साथ लेकर प्रवेश करवाया गया।

68 केंद्रों पर हुई परीक्षा

रोहतक में भिवानी व झज्जर से आने वाले अभ्यर्थियों के लिए जिला प्रशासन द्वारा शटल सेवा की व्यवस्था की गई थी। शटल बस सेवा के माध्यम से सभी वाहनों को रोहतक के राजीव गांधी स्टेडियम में लाया गया। यहां से परीक्षा केंद्रों के लिए 13 अलग-अलग रूट विभाजित किए गए थे। इन सभी रूटों के माध्यम से परीक्षार्थियों को उनके परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाया गया। रोहतक में कुल 68 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इनमें से तीन परीक्षा केंद्र महम व 65 परीक्षा केंद्र रोहतक शहर में है।

डॉक्टर एवं एम्बुलेंस रही तैनात

चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए सात अलग-अलग जगहों पर एम्बुलेंस व डॉक्टरों की टीम में तैनात की गई थी। इन परीक्षा केंद्रों पर रेडक्रॉस के वॉलिंटियर्स अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे थे। इन सभी सेंटर पर दिव्यांगजनों के लिए 50 व्हील चेयर उपलब्ध करवाई गई थी। परीक्षा के दौरान ट्रैफिक व पार्किंग की भी उचित व्यवस्था की गई थी। परीक्षा के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से अलग-अलग स्थान पर इयूटी मजिस्ट्रेट तैनात किए गए हैं।

6 क्लस्टर स्थापित किए गए थे

इसी प्रकार से रोहतक से फरीदाबाद व गुरुग्राम जाने के लिए 6 क्लस्टर स्थापित किए गए थे। इन क्लस्टर में रोहतक बस स्टैंड, महम बस स्टैंड, कलानौर बस स्टैंड, सांपला बस स्टैंड, मदीना व लाखन माजरा का राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय शामिल है। इन सभी क्लस्टर से आज प्रातः ही बसों का संचालन सुचारु रूप से हो गया था। परीक्षार्थियों को बिना किसी बाधा के गुरुग्राम व फरीदाबाद पहुंचाया गया। दूसरे जिलों झज्जर व भिवानी से रोहतक पहुंचे परीक्षार्थियों के ठहरने के लिए भी जिला प्रशासन द्वारा समुचित व्यवस्था की गई थी।

खचाखच भरी रही बसें

रोहतक से गुरुग्राम, फरीदाबाद जाने वाली बसें खचाखच भरी रही। कई बसों में सवारियों को खड़े होकर सफर करना पड़ा। इसके अलावा तीज का त्योहार होने की वजह से लोगों का आवागमन जारी रहा। उन्हें बसें न मिलने की वजह से प्राइवेट वाहनों में सफर करना पड़ा।

सुबह 94.28% सायं 94.13% उपस्थिति रही

रोहतक में सीईटी की प्रातः कालीन शिफ्ट (समय 10.00 बजे दिन से समय 11.45 बजे दिन तक) की परीक्षा में कुल 16360 परीक्षार्थियों में 15426 परीक्षार्थी (94.28 प्रतिशत) उपस्थित हुए और 934 परीक्षार्थी गैर हाजिर रहे। रोहतक में 51 स्कूलों में 68 परीक्षा केन्द्र बनाए हुए हैं। परीक्षा के सभी केन्द्रों पर वीडियोग्राफी की गई। इसी तरह सायं कालीन सत्र में आयोजित परीक्षा (समय 3.15 बजे दिन से समय 5.00 बजे सायं) में 16360 परीक्षार्थियों में 15400 परीक्षार्थी (94.13 प्रतिशत) उपस्थित हुए और 960 गैर हाजिर रहे।

इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में परीक्षा में बैठे अभ्यर्थी : हिम्मत सिंह

90% अभ्यर्थियों की उपस्थिति का अनुमान, परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

रोहतक। परीक्षा केंद्रों के बाहर मौजूद अभ्यर्थियों व उनके अभिभावकों से बातचीत करते हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (एचएसएससी) के चेयरमैन हिम्मत सिंह।

रोहतक। हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (एचएसएससी) के चेयरमैन हिम्मत सिंह ने कहा है कि हरियाणा के इतिहास में पहली बार बहुत बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों सीईटी परीक्षा में उपस्थित हुए हैं। हिम्मत सिंह रोहतक में शिक्षा भारती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परीक्षा केंद्र का निरीक्षण करने के उपरांत मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस परीक्षा में लगभग 90 प्रतिशत अभ्यर्थी उपस्थित हुए हैं। इससे पहले 50 से 60 प्रतिशत की औसत रही है।

4 जिलों का किया निरीक्षण

हिम्मत सिंह ने बताया कि आज उन्होंने प्रदेश के चार जिलों के विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया है। इस दौरान परीक्षार्थियों और उनके अभिभावकों से बातचीत भी हुई है। सभी लोग व्यवस्थाओं को लेकर संतुष्ट है। उन्होंने कहा कि सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के अलावा प्रशासन ने इस परीक्षा को करने में बेहतरीन व्यवस्था की है। इस परीक्षा के आयोजन को लेकर ऐसा लग रहा है कि पूरा हरियाणा एक टीम के रूप में कार्य कर रहा हैं।

महम: तीन केंद्रों पर शांतिपूर्ण संपन्न हुई सीईटी की परीक्षा

महम। परीक्षा केंद्र पर एडमिट कार्ड चेक करता स्टाफ।

महम। व्हीलचेयर पर परीक्षा देने के लिए परीक्षा केंद्र की ओर जाता जाता परीक्षार्थी।

महम। सीईटी परीक्षा के लिए महम में बनाए गए तीनों परीक्षा केंद्रों पर प्रातःकालीन व सांयकालीन सत्र की परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुई। तीनों परीक्षा केंद्रों पर पर्याप्त पुलिसबल तैनात किया गया था। सभी विद्यार्थियों के फिंगर प्रिंट का मिलान किया गया। सभी परीक्षार्थियों के एडमिट कार्ड चैक किए गए। परीक्षार्थियों की अच्छी तरह जांच पड़ताल के बाद ही उनको परीक्षा केंद्र में प्रवेश करने दिया गया। एसडीएम मुकुंद, डीएसपी मुकुंद और एसएचओ सुभाष ने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। परीक्षा केंद्रों तक परीक्षार्थियों को पहुंचाने और लाने के लिए वाहनों के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। दिव्यांगों को परीक्षा केंद्रों पर व्हील चेयर उपलब्ध करवाई गई। महम बस अड्डा इंचार्ज कुलबीर मोर ने बताया कि परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्रों तक भेजने के लिए महम की नई अनाज मंडी में बस सेंटर बनाया गया था। यहां से बसें फरीदाबाद और गुरुग्राम के लिए सुबह 3 बजे निकलनी शुरू हो गई थी। महम इलाके के परीक्षार्थियों के परीक्षा केंद्र फरीदाबाद व गुरुग्राम में बनाए गए हैं। 49 बसें गुरुग्राम भेजी गई और 25 बस फरीदाबाद के लिए रवाना हुई। जिनमें करीब 3600 विद्यार्थी सवार हुए।

जॉब के नाम पर ठगी करने का आरोपी धरा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

साइबर क्राइम थाना की टीम ने 8 लाख 78 हजार रुपये से ज्यादा की ठगी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया है। साइबर क्राइम थाना प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि महम निवासी सीमा ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। जिसके आधार पर केस दर्ज करके जांच शुरू की गई। जांच में सामने आया कि 26 अगस्त 2023 को सीमा की टेलीग्राम आईडी पर ऑनलाइन जॉब करने बारे मैसेज आया। 27 अगस्त 2023 को दोबारा से पार्ट टाइम के लिए मैसज आया और पूरा प्रोसेस ट्रेलिग्राम के माध्यम से सीमा को बताया कि हर रोज 1500 से 2 हजार रुपये कमा सकती है। सीमा को उन्होंने बताया कि वो 15 हजार रुपये प्रति माह कमा सकती है। 11 सितंबर 2023 को उन्होंने पार्ट टाइम जॉब करने के लिये एक लिंक भेजा। सीमा ने लिंक पर उनके कहे अनुसार खाता ओपन कर यूजर आईडी बनाई। उनके कहे अनुसार सीमा ने अपने खाता की डिटेल भर दी। बेवसाइट पर यूजर आईडी बनने के बाद उन्होंने एयरलाइन की टिकट बुकिंग करने का टास्क दिया। टास्क पूरा करने के बाद 1155 रुपये सीमा के खाते में आ गए। सीमा को और पैसे कमाने के लिये टेलीग्राम पर एक लिंक ज्वाइन करने को कहा। सीमा ने अपने उस लिंक को ज्वाइन कर अपने आईडी को रिचार्ज करने के लिये दस हजार ट्रांसफर किए। सीमा को उसके बाद टिकट बेचने का टास्क मिला और आईडी को -23 हजार रुपये दिखाया। जिसके बाद सीमा को कहा कि अगर वह टास्क पूरा करना चाहती है तो उसे 23 हजार रुपये का रिचार्ज करना होगा। सीमा ऐसे ही टास्क पूरा किया और दूसरे टास्क पर फिर से आईडी में -10 हजार रुपये का रिचार्ज करने को कहा।

डॉक्टर और शोधकर्ता अपने विचार और खोज को देश और समाज के लिए उपयोगी बना सकें

डॉ. एचके अग्रवाल बने इंडियन एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल मेडिसिन के नए अध्यक्ष

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

डॉ. एच के अग्रवाल

चिकित्सा शिक्षा, रिसर्च और नैतिक चिकित्सकीय सेवा को नई दिशा देने की योजना रोहतक प्रसिद्ध चिकित्सक और शिक्षा शास्त्री डॉ. एचके अग्रवाल को इंडियन एसोसिएशन ऑफ क्लिनिकल मेडिसिन का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया है। डॉ. अग्रवाल वर्तमान में पं. भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, रोहतक के कुलपति और पीजीआईएमएस रोहतक में मेडिसिन विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। यह चुनाव 20 जून 2025 को आगरा में आयोजित किया गया था और परिणामों की घोषणा 20 जुलाई 2025 को संस्था की गवर्निंग बॉडी की बैठक में की गई। इस चुनाव में देशभर के डॉक्टर्स ने सक्रिय भागीदारी दिखाई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चिकित्सा क्षेत्र में डॉ. अग्रवाल के प्रति गहरी आस्था और विश्वास है। आईएसीएम एक देशव्यापी संस्था है जो चिकित्सा शिक्षा, क्लिनिकल अनुभव और रिसर्च को बढ़ावा देती है। इसमें देशभर से 3,000 से भी अधिक डॉक्टर सदस्य हैं। संस्था का उद्देश्य भारतीय चिकित्सा प्रणाली को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और भी प्रभावशाली बनाना है। डॉ. अग्रवाल को चिकित्सा क्षेत्र में 35 वर्षों का अनुभव है। हजारों एमबीबीएस और पीजी छात्रों को पढ़ाया है, कई चिकित्सा शोध किए हैं, और स्वास्थ्य नीति-निर्माण में भी सक्रिय भागीदारी निभाई है। वे एक ऐसे डॉक्टर के रूप में जाने जाते हैं जो न केवल इलाज में निपुण हैं, बल्कि एक अच्छे शिक्षक, मार्गदर्शक और प्रशासक भी हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति और रजिस्ट्रार के रूप में काम करते हुए कई सुधार और योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है। अपना पद संभालते समय डॉ. अग्रवाल ने कहा कि मैं इस जिम्मेदारी को एक अवसर मानता हूं कि हम आने वाली पीढ़ी के डॉक्टरों को सिर्फ किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि व्यवहारिक समझ, नैतिकता, करुणा और तकनीक से लैस करें। हमारा लक्ष्य ऐसे डॉक्टर तैयार करना है जो मरीज की समस्या को सिर्फ बीमारी न समझे।

पांच साल में पैसों को डबल, ट्रिपल करने वाले सात फंड, निवेशकों को बड़ा फायदा

- हाइब्रिड कैटेगरी की स्कीम्स ने इक्विटी को दी कड़ी टक्कर
- बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स ने 5 साल में दिया बढ़िया रिटर्न
- निवेशकों के पैसों को दो से तीन गुना तक कर दिया

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड्स से हाई रिटर्न हासिल करने की बात हो तो आम तौर पर हमारा ध्यान इक्विटी स्कीम की तरफ ही जाता है, लेकिन हाइब्रिड फंड्स की एक कैटेगरी ऐसी है, जो निवेशकों को ऊंचा रिटर्न देने के मामले में इक्विटी फंड्स को टक्कर दे सकती है। ये कैटेगरी है डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड्स यानी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स की। इस कैटेगरी के टॉप 7 फंड्स ने 5 साल में निवेशकों के पैसों को डबल-ट्रिपल करके दिखाया है। साथ ही सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) पर भी इनका सालाना रिटर्न काफी आकर्षक रहा है। इन टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, निप्पॉन इंडिया, आईसीआईसीआई प्रू, टाटा म्यूचुअल फंड, बड़ौदा बीएनपी परीबा और आदित्य बिरला सनलाइफ जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

ऐसा रहा प्रदर्शन

टॉप 7 बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स का पिछले 5 साल का एनुअल रिटर्न करीब 15% से 24% तक रहा है. इन सभी फंड्स ने 5 साल पहले किए गए 1 लाख रुपये के निवेश को दो लाख से तीन लाख रुपये में तब्दील कर दिया है. इतना ही नहीं, इन सभी फंड्स ने **SIP** के जरिये किए गए निवेश पर भी साल दर साल 13% से लेकर 21% तक का एन्युलाइज्ड रिटर्न दिया है. आइए डालते हैं इन सभी फंड्स के पिछले प्रदर्शन पर एक नजर।

1. एचडीएफसी बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 24.62%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 3 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 10.12 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 21.02%)

2. बड़ौदा बीएनपी परीबा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 17.03%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.20 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.89 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न: 15.74 %)

3. एडेलवाइज बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.92%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.09 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.44 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.6%)

4. आदित्य बिरला सनलाइफ बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.71%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.08 लाख
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.60 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.4%)

5 साल में 15 से 24% तक एनुअल रिटर्न दिया

5. निप्पॉन इंडिया बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.67%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.07 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 14.02%)

6. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 15.52%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.06 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.52 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.99%)

7. टाटा बैलेंस्ड एडवांटेज फंड - डायरेक्ट प्लान
- 5 साल का रिटर्न (सीएजीआर): 14.99%
- 1 लाख रुपये का निवेश 5 साल में हो गया : 2.01 लाख रुपये
- 10 हजार रुपये मंथली एसआईपी से 5 साल में बने : 8.32 लाख रुपये (एन्युलाइज्ड रिटर्न : 13.03%)

बेंचमार्क और रिस्क लेवल

इन सभी हाइब्रिड फंड्स का बेंचमार्क इंडेक्स इन दो में से कोई एक है - निफ्टी 50 हाइब्रिड कंपोजिट डेट 50:50 इंडेक्स, जिसका पिछले 5 साल का सीएजीआर 12.70% रहा है या क्रिसिल हाइब्रिड 50+50 मॉडरेट इंडेक्स, जिसका 5 साल का सीएजीआर 13.62% है। सभी 7 फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत अधिक जोखिम की रेटिंग दी गई है।

बैलेंस्ड एडवांटेज फंड की निवेश रणनीति

पोर्टफोलियो में इक्विटी और डेट के बीच फंड एलोकेशन को वक्त के हिसाब से बदलने की रणनीति बैलेंस्ड एडवांटेज फंड या डायनैमिक एसेट एलोकेशन फंड (**Balanced Advantage Fund or Dynamic Assest Allocation**) की सबसे बड़ी खूबी है. इस रणनीति की बदौलत ये म्यूचुअल फंड बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच भी बेहतर और स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं. सेबी के नियमों के तहत इन फंड्स के मैनेजर को इक्विटी और डेट के बीच अपना फंड एलोकेशन जीरो से 100% तक बदलते रहने की छूट मिली हुई है। इस रणनीति का एक फायदा यह भी है कि अगर फंड मैनेजर इक्विटी में निवेश को 65% या उससे ऊपर रखता है, तो इसमें निवेश पर इक्विटी फंड्स की तरह टैक्स बेनिफिट भी मिल सकते हैं। हालांकि इक्विटी में ज्यादा एक्सपोजर की संभावना के कारण बैलेंस्ड एडवांटेज फंड में रिस्क भी अधिक रहता है. इसलिए इनमें निवेश का फैसला करने से पहले अपनी रिस्क बर्दाश्त करने की क्षमता को परख लेना चाहिए और हमेशा लंबी अवधि के लिए पैसे लगाने की तैयारी रखनी चाहिए. साथ ही यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि म्यूचुअल फंड का पिछला रिटर्न भविष्य में जारी रहने की गारंटी नहीं होती।

(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सलाह देना नहीं, निवेश का कोई भी फैसला अपने इनवेस्टमेंट एडवाइजर की सलाह लेने के बाद ही करें।)

जीवन में आगे बढ़ने के साथ-साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, जल्द बनेंगे करोड़पति

सुझाव
बिजनेस डेस्क

- हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें, इससे बढ़िया रिटर्न मिलेगा
- अपनी रिस्क क्षमता को जांच लें, अनावश्यक खर्चों पर रोक लगाएं
- हर साल अपने सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान को भी अपग्रेड करें
- अपनी कमाई का कम से कम दस फीसदी हिस्सा बचत में लगाएं

अगर आप भी निवेश के जरिये अच्छा पैसा जुटाना चाहते हैं तो अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं। इससे आपको जल्द करोड़पति बनने से कोई नहीं रोक पाएगा। आप अपने सपने आसानी से पूरे कर पाएंगे। इसके लिए जरूरी है, अपने लक्ष्य तय करें और लंबी अवधि के लिए निवेश का प्लान बनाए। अपने जीवन में आगे बढ़ने के साथ साथ निवेश को भी बढ़ाते जाएं यानी निवेश के लिए स्टेप-अप एसआईपी के फार्मूले को अपनाएं। अपने अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाएं और अपनी इनकम का कम से कम दस फीसदी निवेश जरूर करें और इसे हर साल बढ़ाते जाएं। फिर देखना आपका पैसा दिन दूनी और रात चौगुनी के साथ बढ़ेगा। नए अवसर, बड़े सपने और बदलती जीवनशैली के साथ जीवन आगे बढ़ते रहने की कहानी है। जैसे-जैसे आपकी आय बढ़ती है, वैसे-वैसे आपकी ख्वाहिशें और खर्च भी बढ़ते हैं। क्या आपकी निवेश रणनीति भी इसी रफ्तार से आगे बढ़ रही है? जिस तरह आप अपने सपनों की नई बाइक खरीदते हैं, या बेहतर घर में शिफ्ट होते हैं, उसी तरह जरूरी है कि आप अपने एसआईपी (सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान) को भी अपग्रेड करें ताकि, वो आपके बदलते जीवन के साथ कदम से कदम मिला सके। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि स्टेप-अप एसआईपी (एसआईपी राशि को बढ़ाना) क्या है और कैसे यह आपको वित्तीय रूप से आगे बनाए रखने में मदद करता है।

स्टेप-अप एसआईपी क्या है

- स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को तय अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं। इसलिए स्टेप-अप एसआईपी जरूरी : बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल
- जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

महंगाई को मात

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक समान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।

स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
- पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- इस तरह धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब पर भी एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

असरदार तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें

स्टेप-अप एसआईपी के ज़रिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लग्ज़री कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हसिल कर सकते हैं।

चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू

हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ़र्क देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज़्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज़ की ताकत कहते हैं।

आईटीआर फाइलिंग : कुछ गलतियों की वजह से आ सकता है नोटिस

●जुर्माना भी लग सकता है और रिटर्न रिजेक्ट होने का भी रहता है खतरा ● टैक्सपेयर्स अक्सर आईटीआर फॉर्म चुनने में कर जाते हैं बड़ी गलतियां ● वेरिफिकेशन में गलती करते हैं, तो बढ़ सकती है आपकी परेशानी

जानकारी
बिजनेस डेस्क

इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना हर साल टैक्सपेयर्स के लिए एक जरूरी काम होता है, लेकिन कई बार इसमें छोटी-छोटी गलतियां उनके लिए भारी पड़ जाती हैं। वित्त वर्ष 2024-25 (असेसमेंट ईयर 2025-26) के लिए इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने की आखिरी तारीख 15 सितंबर 2025 तक है। इस बीच इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आईटीआर-1, 2, 3 और 4 के लिए एक्सेल यूटिलिटी जारी कर दी हैं, जिससे प्रक्रिया शुरू करने का रास्ता साफ हो गया है। हालांकि, जल्दबाजी या जानकारी की कमी के कारण कई बार टैक्सपेयर्स ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जो नोटिस, जुर्माना या रिटर्न के रद्द होने का कारण बन सकती हैं। आइए जानते हैं, सात ऐसी आम गलतियों के बारे में, जिनसे टैक्सपेयर्स को बचना चाहिए।

गलत आईटीआर फॉर्म चुनना

सबसे आम गलती है गलत आईटीआर फॉर्म का चयन। हर फॉर्म खास तरह की आय और टैक्सपेयर्स के लिए बनाया गया है। मिसाल के तौर पर, अगर आपने शेयरों की बिक्री से 1.25 लाख रुपये से ज्यादा का लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन कमाया है या आपके पास किसी विदेशी बैंक में अकाउंट है, तो आप आईटीआर-1 की जगह आईटीआर-2 भरना होगा। गलत फॉर्म चुनने से आपकी रिटर्न 'डिफेक्टिव' मानी जा सकती है या इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है। इसलिए, अपनी आय के सोर्स को ध्यान से देखें और सही फॉर्म चुनें।

सभी आय के सोर्स न बताना

कई टैक्सपेयर्स अपनी सारी आय को रिटर्न में नहीं दिखाते, चाहे वह टैक्सेबल हो या नहीं। मसलन, बचत खाते का ब्याज, फिक्स्ड डिपॉजिट का ब्याज, किराए की आय या शेयरों से डिविडेंड को छिपाना गलत है। भले ही बचत खाते के ब्याज पर 10,000 रुपये तक की छूट मिलती हो, लेकिन इसे रिटर्न में दिखाना जरूरी है। आय छिपाने से इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की नजर में आप गलत ठहर सकते हैं, जिससे नोटिस या जुर्माना लग सकता है।

नौकरी बदलने पर आय छिपाना

अगर आपने वित्त वर्ष में नौकरी बदली है, तो दोनों एम्प्लॉयर्स से मिली आय को रिटर्न में दिखाना जरूरी है। दोनों की फॉर्म-16 को ध्यान से देखें और सुनिश्चित करें कि कोई आय छूट न जाए। कई बार टैक्सपेयर्स पुराने एम्प्लॉयर की आय या टीडीएस की जानकारी छोड़ देते हैं, जो गलत है। एआईएस में आपकी सारी आय की जानकारी होती है, इसलिए इसे छिपाने की कोशिश न करें, वरना नोटिस का सामना करना पड़ सकता है।

फॉर्म 26एएस की जांच न करना

रिटर्न फाइल करने से पहले फॉर्म 26 एएस और एनुअल इन्फॉर्मेशन स्टेटमेंट (एआईएस) की जांच करना जरूरी है। ये डॉक्यूमेंट्स आपकी आय, टीडीएस और बड़े लेनदेन की जानकारी देते हैं। अगर इनमें कोई गलती है, जैसे बैंक द्वारा काटा गया टीडीएस गलत दिख रहा हो, तो उसे ठीक करवाएं। इन डॉक्यूमेंट्स का मिलान फॉर्म-16, बैंक स्टेटमेंट और अन्य रिकॉर्ड से करें। अगर जानकारी में अंतर हुआ, तो इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से नोटिस आ सकता है।

गलत डिडक्शन का दावा करना

कई टैक्सपेयर्स बिना सबूत के सेक्शन 80सी, 80डी या अन्य छूट का दावा कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की स्कूल फीस, एलआईसी प्रीमियम या मेडिकल इंश्योरेंस के लिए छूट तभी ले सकते हैं, जब आपके पास वैध डॉक्यूमेंट हों। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट अब एआईएस और एआई टूल्स के जरिए ऐसी गलतियों को आसानी से पकड़ लेता है। अगर आप बिना सबूत के छूट लेते हैं, तो नोटिस मिल सकता है या रिटर्न रद्द हो सकता है।

विदेशी संपत्ति की जानकारी न देना

अगर आपके पास विदेशी बैंक खाता, शेयर या दूसरी संपत्ति है, तो उसे रिटर्न में बताना जरूरी है। बजट 2024 में नियमों में थोड़ी ढील दी गई है, जिसमें 20 लाख रुपये तक की चल संपत्ति को न दिखाने की छूट दी गई है। लेकिन इसके बावजूद, पूरी जानकारी देना अनिवार्य है। विदेशी संपत्ति छिपाने पर पहले 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगता था, लेकिन नए नियमों के बावजूद सावधानी बरतें।

रिटर्न का वेरिफाई न करना

रिटर्न फाइल करने के बाद उसे 30 दिनों के अंदर वेरिफाई करना जरूरी है। यह सत्यापन आधार ओटीपी , नेट बैंकिंग या आईटीआर वी को डाक से भेजकर किया जा सकता है। अगर आप वेरिफाई नहीं करते, तो रिटर्न को अमान्य माना जाता है, जैसे कि आपने रिटर्न फाइल ही नहीं किया। कई टैक्सपेयर्स यह भूल जाते हैं, जिससे उनकी रिटर्न प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और जुर्माना लग सकता है।

ऋण | एमएफ लोन पर ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन से अधिक, लोन लेने का फैसला करने से पहले सभी विकल्पों पर विचार करें

अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले, इससे आपकी एसआईपी चलती रहेगी

म्यूचुअल फंड पर भी ले सकते हैं लोन, लेकिन जान लें कुछ बातें क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में एमएफ पर लोन सस्ता

समझदारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी लोन लेन जा रहे हैं और म्यूचुअल फंड (एमएफ) में निवेश करते हैं जो आपके लिए म्यूचुअल फंड पर लोन लेना बेहतर विकल्प हो सकता है। चूंकि म्यूचुअल फंड पर लोन क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन की तुलना में काफी सस्ता होता है। हालांकि इसकी ब्याज दर सोने या एफडी पर लोन लेने की तुलना में अधिक हो सकती हैं। फिर भी लोन लेने से पहले सभी विकल्पों पर विचार कर लिया जाना चाहिए। इससे आप आसानी से और सस्ती ब्याज दरों पर लोन ले सकेंगे। जीवन में कई कारणों से कभी-कभी अस्थायी रूप से पैसों की तंगी का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, यह घर के नवीनीकरण, परिवार में शादी या किसी चिकित्सा आपात स्थिति के कारण हो सकता है। ऐसी नकदी की तंगी की स्थिति में, सबसे पहला विचार यही आता है कि अपनी बचत का इस्तेमाल करें और नुकसान होने पर भी अपने निवेश को बेच दें। और अगर इससे भी काम न चले, तो आप ऋण लेने की सोचते हैं। हालांकि, निवेश को बेचना सबसे अच्छा उपाय नहीं है। अपने म्यूचुअल फंड निवेश को बेचने के बजाय, आप उन पर लोन ले सकते हैं। जी हां, जैसे आप लोन के लिए सोना और रियल एस्टेट जैसी अन्य संपत्तियां गिरवी रख सकते हैं, वैसे ही आप बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) से अपने म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर लोन ले सकते हैं। एमएफ पर लोन लेने से पहले आप 6 प्रमुख बातों के बारे में जान लें। ये आपके काफी काम आएंगी।

म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स की एक सीमा तक ही ऋण मिलेगा

आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स के बदले आपको मिलने वाले ऋण की राशि काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि आपने किस प्रकार की म्यूचुअल फंड योजना में निवेश किया है और आप किस वित्तीय संस्थान से ऋण लेंगे। उदाहरण के लिए, एचडीएफसी और आईसीआईसीआई जैसे बैंक आपको इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) के 50% तक और डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 80% तक का लोन देते हैं। दूसरी ओर, एक्सिस बैंक आपकी डेट म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 85% तक और इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं के मूल्य के 60% तक का लोन प्रदान करता है।

सभी बैंक सभी म्यूचुअल फंडों पर ऋण नहीं देते

कई बैंक केवल उनके द्वारा चयनित म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर ही ऋण देते हैं। उदाहरण के लिए, एसबीआई केवल एसबीआई म्यूचुअल फंड की म्यूचुअल स्कीमों पर ही ऋण देता है। एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक भी उन स्कीमों के बारे में चयनात्मक हैं जिन पर वे ऋण देते हैं। ये दोनों निजी बैंक कंप्यूटर एज मैनेजमेंट सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (सीएमएस) के साथ पंजीकृत एसेट मैनेजमेंट कंपनियों द्वारा प्रबंधित म्यूचुअल फंड स्कीमों पर ऋण प्रदान करते हैं। इसी प्रकार, एक्सिस बैंक ने अपनी वेबसाइट पर म्यूचुअल फंड योजनाओं का एक सेट सूचीबद्ध किया है, जिसके आधार पर वह धन उधार देता है।

मिलने वाला ऋण राशि की ऊपरी सीमा

किसी भी प्रकार के ऋण की तरह, म्यूचुअल फंड पर दिए जाने वाले ऋणों की भी कुछ सीमाएं होती हैं। कई बैंकों ने आपको मिलने वाले ऋण की अधिकतम और न्यूनतम सीमा तय कर रखी है। उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई बैंक जैसे अधिकांश बड़े निजी बैंकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड के मामले में न्यूनतम ऋण राशि 50,000 रुपये और अधिकतम राशि 20 लाख रुपये तथा डेट म्यूचुअल फंड के मामले में 1 करोड़ रुपये तक निर्धारित की है। एनबीएफसी के मामले में, न्यूनतम और अधिकतम दोनों सीमाएं आमतौर पर ज़्यादा होती हैं। उदाहरण के लिए, आदित्य बिड़ला फाइनेंस में न्यूनतम ऋण राशि 25 लाख रुपये और अधिकतम 10 करोड़ रुपये है। बजाज फिनसर्व के मामले में भी यही स्थिति है।

ऋण की लागत व्यक्तिगत ऋण व क्रेडिट कार्ड ऋण से कम

म्यूचुअल फंड पर लोन का एक प्रमुख लाभ यह है कि आपको क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन की तुलना में कम ब्याज दर मिलती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि म्यूचुअल फंड पर लोन सुरक्षित होते हैं, यानी उनके पीछे कोई संपार्श्विक होता है। उदाहरण के लिए, आपको म्यूचुअल फंड पर लिए गए लोन पर 8-10% की ब्याज दर चुकानी होगी। यह आपके द्वारा चुनी गई बैंक और म्यूचुअल फंड योजनाओं के आधार पर अलग-अलग होगा। अगर आप डेट फंड योजनाओं की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर कम होती है, और अगर आप इक्विटी फंड की यूनिटें गिरवी रखते हैं तो ब्याज दर ज़्यादा होती है।
दूसरी ओर, क्रेडिट कार्ड लोन या पर्सनल लोन जैसे असुरक्षित लोन के मामले में, लोन आपकी किसी भी वित्तीय संपत्ति द्वारा समर्थित नहीं होता है। इसलिए, बैंक द्वारा उठाए जा रहे उच्च जोखिम के अनुरूप, आपसे 8-10% से अधिक ब्याज दर वसूलने की संभावना होती है।

गिरवी रखी गई एमएफ यूनिटों पर रिटर्न मिलता रहेगा

जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स को गिरवी रखकर उन पर लोन लेते हैं, तो वे यूनिट्स बाजार में निवेशित रहती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स किसी बैंक में गिरवी रखते हैं, तो आप बैंक को यह अधिकार देते हैं कि वह म्यूचुअल फंड यूनिट्स को तभी बेचे जब आप डिफॉल्ट करें। लेकिन जब तक आप डिफॉल्ट नहीं करते, तब तक आपके निवेश बाजार से जुड़े रहते हैं और आप उन पर रिटर्न कमाते रहते हैं। इस प्रकार, आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी वित्तीय योजना अभी भी बरकरार है और साथ ही आप किसी भी यूनिट को भुनाए बिना अल्प सूचना पर आवश्यक पूंजी जुटा सकते हैं।

ऑनलाइन कर सकते हैं आवेदन

तकनीक की बदौलत, एसबीआई, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई जैसे कई बैंक अब आपके म्यूचुअल फंड होल्डिंग्स पर ऑनलाइन लोन दे रहे हैं। आपको बस अपनी म्यूचुअल फंड यूनिट्स ऑनलाइन गिरवी रखनी हैं और अपने खाते में ओवरड्राफ्ट लिमिट सेट करवानी है। ओवरड्राफ्ट सुविधा का मतलब है आपके बैंक के साथ एक क्रेडिट समझौता जिसके तहत आप अपने खाते में जमा राशि से ज़्यादा पैसे निकाल सकते हैं। इसकी एक पूर्व-स्वीकृत सीमा होती है।

खबर संक्षेप

सुभाष नगर में आज होगा तीज मेले का आयोजन

रोहतक। एसएनजन वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा 27 जुलाई को सुभाष पार्क में ऐतिहासिक और यादगार तीज मेले का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए प्रधान जतिन बत्रा ने बताया कि पहली बार सुभाष नगर में होने वाले इस मेले में डीजे के साथ-साथ ढोल भी होगा। जहां पर बच्चों का डांस, तंबोला, मेहंदी, झूले, विविध स्टॉल, स्वादिष्ट व्यंजन, बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता, आकर्षक उपहार, तथा ढेर सारी मस्ती होगी। एसोसिएशन द्वारा जरूरतमंद महिलाओं को फ्री सूट भी दिए जाएंगे।

कारगिल विजय दिवस पर दीप वंदना कर किया नमन

रोहतक। कारगिल विजय दिवस के अवसर पर शहर की स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा राज्य स्तरीय स्मारक एमडीयू में दीप वंदना का आयोजन किया गया। आए हुए सभी प्रतिनिधियों ने दीप जलाकर अमर जवानों और शहीदों को अपना वंदन किया। इस राजेंद्र शर्मा ने कहा कि हमें अपने शहीदों एवं अमर जवानों की कुर्बानी को सदा याद रखना चाहिए। ज समाजसेवी एवं पूर्व नौसेना अधिकारी जगत सिंह गिल ने कहा कि सभी स्मारकों पर दीप वंदना कर शहीदों को याद करना हमारा परम कर्तव्य है।

एमडीयू में शंखनाद व मंत्रोच्चारण से होगा दीक्षारंभ उत्सव का शुभारंभ

28 से 30 तक नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए होगा तीन दिवसीय कार्यक्रम

कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह करेंगे दीक्षारम्भ उत्सव का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय 28 से 30 जुलाई तक टैगोर सभागार में नव प्रवेश प्राप्त स्नातक विद्यार्थियों के लिए तीन दिवसीय दीक्षारम्भ उत्सव का भव्य आयोजन करने जा रहा है। यह आयोजन विश्वविद्यालय के शैक्षणिक व सांस्कृतिक जीवन की एक नई शुरुआत का प्रतीक होगा, जिसमें पहली बार शंखनाद और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विद्यार्थियों के शिक्षण जीवन की औपचारिक शुरुआत की जाएगी।

इस दीक्षारम्भ उत्सव का शुभारंभ कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह करेंगे। इस संदर्भ में कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह ने शनिवार को आयोजन की तैयारियों को लेकर संबंधित अधिकारियों और आयोजन समिति के सदस्यों के साथ बैठक की और उत्सव को गरिमामय, प्रेरणादायक एवं भव्य बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह दीक्षारम्भ समारोह न केवल विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की परंपराओं से परिचित कराएगा, बल्कि उनमें एक सकारात्मक और प्रेरणादायक शैक्षणिक माहौल भी सृजित करेगा। कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह ने कहा कि दीक्षारम्भ उत्सव विद्यार्थियों में न केवल आत्मविश्वास और उद्देश्य की भावना का संचार करेगा, बल्कि विश्वविद्यालय के प्रति उनके मन में गर्व और जुड़ाव भी उत्पन्न करेगा। उन्होंने सभी संकायों, अधिकारियों और आयोजन समिति से इस उत्सव को सफल और प्रभावशाली बनाने का आह्वान किया। डीन, एकेडमिक अफेयर्स प्रो. हरीश कुमार ने कहा कि यह आयोजन महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की शिक्षण गुणवत्ता, संस्कृति और छात्र केंद्रित दृष्टिकोण का सजीव उदाहरण बनेगा। डीन, स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. सपना गर्ग ने बैठक में दीक्षारम्भ उत्सव की रूपरेखा का ब्यौरा दिया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय प्रशासन इस दीक्षारम्भ उत्सव को एक परंपरा के रूप में स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। आने वाले वर्षों में भी यह उत्सव नए विद्यार्थियों के स्वागत और उनके शिक्षण जीवन की शुभ शुरुआत का प्रमुख मंच बना रहेगा। इस बैठक में डीन, एकेडमिक अफेयर्स प्रो. हरीश कुमार, प्रॉक्टर प्रो. रणदीप राणा, डीएसडब्ल्यू प्रो. सपना गर्ग, प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस सुनील जागलान, डिप्टी डीन, स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. सोनू, उप निदेशक जनसंपर्क डॉ. नवीन कुमार, पीआरओ पंकज नैन, डीएसडब्ल्यू कर्मी नरेश अहलावत शामिल हुए और महत्वपूर्ण इनपुट्स दिए।

रोहतक। तैयारियों को लेकर संबंधित अधिकारियों और आयोजन समिति के सदस्यों के साथ बैठक लेते कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह। फोटो: हरिभूमि

दीक्षारंभ उत्सव की विशेषताएं

पहली बार शंखनाद और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ दीक्षारम्भ उत्सव की शुरुआत की जाएगी, जो विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और शिक्षा परंपरा से जोड़ने का कार्य करेगा। टैगोर सभागार की गैलरी में 'गेस्ट स्टूडेंट गैलरी' की विशेष व्यवस्था की गई है, जिसमें वे विद्यार्थी भी भाग ले सकेंगे, जो पूर्व से विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं तथा इस प्रेरणादायक उत्सव का हिस्सा बनना चाहते हैं। नवागंतुक विद्यार्थियों के स्वागत के लिए विशेष स्वागत द्वार और सेल्फी प्वाइंट्स स्थापित किए जाएंगे, जो आयोजन को युवाओं के बीच आकर्षक और स्मरणीय बनाएंगे। लाइफ कोच और मोटिवेशनल स्पीकर इस उत्सव में विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे और उनमें जीवन जीने का कौशल विकसित करेंगे। उत्सव के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और संकायों की ओर से विद्यार्थियों को शिक्षण प्रणाली, संसाधनों, मूल्यांकन पद्धति, शोध, रोजगार अवसरों आदि की जानकारी दी जाएगी। विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिसर में उपलब्ध सुविधाएं, पुस्तकालय, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियां और अन्य सह-पाठ्यक्रम अवसरों के बारे में भी विस्तार से अवगत कराया जाएगा।

न्यूज डायरी

जीडी गोयनका में मनाया हरियाली तीज उत्सव

रोहतक। जीडी गोयनका इंटरनेशनल स्कूल के सीनियर वर्ग में हरियाली तीज का त्योहार मनाया गया। इस अवसर पर रॉक बैंड के मधुर प्रदर्शन, आकर्षक नृत्य और सुहागन स्त्रियों की निशानी के विभिन्न प्रकार के स्टॉल्स जैसे मेहंदी, चूड़ी, बिंदी आदि ने इस आयोजन को और भी रंगीन और आकर्षक बना दिया। मुख्य अतिथि सुनीता मायना का स्वागत डायरेक्टर सान्या मायना ने फूलों का गुलदस्ता देकर किया। इस आयोजन में किरण तीज क्वीन चुनी गई। स्कूल के डायरेक्टर विक्रांत मायना ने बताया कि आज ही के दिन कारगिल विजय दिवस का गौरवपूर्ण इतिहास भारतीय संस्कृति में हमेशा के लिए दर्ज है। यह दिन देशभक्ति और गर्व की भावना को और भी बढ़ा देता है। प्राचार्या सविता नेहरा ने कहा कि हरियाली तीज भगवान शिव और पार्वती के बीच के सुंदर बंधन को चिन्हित करता है। असिस्टेंट डायरेक्टर हिमांशु गुप्ता ने सभी अभिभावकों एवं मुख्य अतिथि का धन्यवाद दिया।

मायना के आशीष पंघाल इन्दौर में बने स्कूल के खेल सचिव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक के मायना गांव के छात्र आशीष पंघाल को इंदौर के डेली कॉलेज में शनिवार को आयोजित भव्य प्रीफेक्ट्स अलंकरण समारोह में स्कूल के खेल सचिव (स्पोर्ट्स प्रीफेक्ट) पद की जिम्मेदारी सौंपी गई। आशीष को यह महत्वपूर्ण पद उनके अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और खेलों के प्रति समर्पण के लिए प्रदान किया है। इस भूमिका में वे स्कूल की समस्त खेल गतिविधियों के प्रभारी रहेंगे और छात्रों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करेंगे। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक तरीके से हुई और प्राचार्य डॉ. गुनमीत बिंद्रा ने नवचयनित प्रीफेक्ट्स को पद की शपथ दिलाई। डॉ. बिंद्रा ने कहा, प्रीफेक्टोरियल निकाय हमारे स्कूल की गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है और यह छात्र नेतृत्व को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। डेली कॉलेज के प्रीफेक्ट्स को 154 वर्षों पुरानी इस संस्थान के मूल्यों और गरिमा को बनाए रखने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। समारोह में छात्रों को उनके विभिन्न पदों पर नियुक्त करते हुए बैज और प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

आशीष के माता-पिता ने जताई खुशी

इस उपलब्धि पर आशीष के माता-पिता ने भी खुशी जताई है। उनकी माता, रीना ग्रेवाल, नेकीराम गवर्नमेंट कॉलेज में फिजिक्स की सहायक प्रोफेसर हैं, जबकि पिता रोहतक बार में अधिवक्ता हैं। यह समारोह न केवल छात्र नेतृत्व के महत्व को दर्शाता है, बल्कि विद्यार्थियों को जिम्मेदार और प्रेरणादायक नागरिक बनने की दिशा में एक मजबूत कदम भी है। कक्षा 12वीं कके छात्र है, आशीष पंघाल, जिनका शूटिंग खेल की राष्ट्रीय रैंकिंग के चलते स्कूल मे छात्रवृति पर दाखिला हुवा था,उन्हें दसवीं क्लास मे स्कूल मे लिया गया था।

तीज व मेहंदी उत्सव का किया आयोजन

रोहतक। सेवा भारती स्मर्थ किशोरी विकास, सिलाई केंद्र एवं बाल संस्कार केंद्र टिकाना ठाकुर मंदिर किला रोड में कार्यकर्ताओं ने तीज उत्सव व मेहंदी उत्सव मनाया गया। स्वामी अभूतानंद प्रांत उपाध्या सेवा भारती हरियाणा प्रदेश पांजी रोहतक प्रवास के दौरान भक्तों को विशेष आशीवांद मिला। कार्यकर्ता की शुरुआत गायत्री मंत्र से हुई व बच्चों ने तीज उत्सव पर विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए व मेहंदी के कार्यक्रम भी हुआ तथा मेहंदी भी लगाई गई। कार्यक्रम में देशभक्ति गीत गाए गए व विभिनन प्रकार की प्रस्तुतियां दी गई तथा तीज के त्यौहार पर घेवर बांटकर सभी को बधाई दी गई।

विदेश में शिक्षा पर आधारित कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा 'एजुकेशन कनेक्टिंग बॉर्डर्स' शीर्षक के तहत एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को विदेश में उच्च शिक्षा के अवसरों से अवगत कराना था। यह कार्यशाला पठानिया पब्लिक स्कूल, रोहतक में आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम का आयोजन समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा आयरेनिक इंटरनेशनल एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के सहयोग से किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में स्कूल की प्रिंसिपल तन्वी पठानिया ने शिरकत की उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल दौर में छात्र-छात्राओं में विदेश में पढ़ाई का क्रेज बढ़ा है। लेकिन प्रदेश के सैंकड़ों बच्चे फर्जी एजेंटों के जाल में फंस कर ऐसे विदेशी संस्थाओं में दाखिला ले लेते हैं जो फर्जी होते हैं। ऐसे में जरूरी है बच्चों को सही मार्गदर्शन दिया जाए। समर्पण वेलफेयर ट्रस्ट की प्रेसिडेंट सुमन कथूरिया ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य है और जब उन्हें सही मार्गदर्शन मिलेगा तो वे ना सिर्फ अपने परिवार बल्कि देश का नाम भी रोशन करेंगे। विदेश में पढ़ाई के नाम पर बच्चों से ठगी ना हो यही कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। आयरेनिक की डायरेक्टर अंजलि खत्री का कहना था की उनकी संस्था अब तक हजारों बच्चों का शिक्षा के क्षेत्र में मार्गदर्शन कर चुकी है और उनका उद्देश्य है की भारतीय छात्र विदेश में पढ़ाई के लिए सही संस्थाओं को चुनें । कार्यशाला में शैक्षणिक विशेषज्ञों ने विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक प्रक्रियाएं, वीज़ा संबंधित जानकारी, विश्वविद्यालयों का चयन, छात्रवृत्तियां और करियर संभावनाओं पर विस्तृत जानकारी दी।

आर्य स्कूल मदीना में छात्रों ने मनाया तीज का त्योहार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महम

महम। तीज के त्योहार पर परंपरागत परिधान पहनकर अपनी कला का प्रदर्शन करती आर्य स्कूल मदीना की छात्राएं। फोटो: हरिभूमि

मदीना गांव में स्थित आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में तीज का त्योहार परंपरागत तरीके से मनाया गया। इस दौरान बच्चों ने अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। हरियाणा के परंपरागत परिधान पहनकर छात्राओं ने गीतों व नृत्य से धूम मचाई। उन्होंने दामण व चुंदड़ी ओढकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। कई कार्यक्रमों में प्राइमरी विंग के छोटे बच्चों ने भी आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किए। कक्षा 6 से कक्षा 8 तक लड़कियों ने मेहंदी प्रतियोगिता में भाग लिया और हाथों पर मेहंदी की सुंदर-सुंदर कलाकृतियां बनाई। यह प्रतियोगिता विद्यालय के हाउस के मध्य रही। इस प्रतियोगिता में हार्मोनी हाउस की दीपांशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजडम हाउस की रिंकी व जीविका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया व तृतीय स्थान करेज हाउस की लव्या व इंटीग्रिटी हाउस की खुशी ने प्राप्त किया। कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के लड़कों ने पतंग प्रतियोगिता में भाग लिया । विद्यालय के प्रधानाचार्य अशोक दांगी ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया।

रोटरी क्लब आफ रोहतक सफायर ने मनाया हरियाली तीज परिवार मिलन महोत्सव

रोहतक। रोटरी क्लब आफ रोहतक सफायर द्वारा आयोजित दिल्ली रोड पर स्थित दा पेज होटल में सदस्यों के द्वारा हरियाली तीज परिवार मिलन महोत्सव बड़े हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें शहर के गणमान्य व्यक्ति व क्लब के सभी सदस्य परिवार सहित भाग लिया। सभी समारोह में आने वाले अतिथियों व सदस्यों को केसर की टीका लगाकर स्वागत किया व सभी ने पतंगबाजी का लुफत उठाया। मीडिया प्रवक्ता राजीव जैन ने बताया समारोह के मुख्य अतिथि एलपीएस बौसार्ड के एमडी रोटेरियन राजेश जैन, डिस्ट्रिक गर्वनर रोटेरियन डॉ. रवि गुगनानी एवं मोनिका गुगनानी, ऐसिसटैंट गर्वनर रोटेरियन अजीत पाल सिंह, क्लब प्रधान रोटेरियन विजय तायल, सचिव रोटेरियन नीति तायल, खजांची रोटेरियन विकास कंसल, प्रोजेक्ट चेयरमैन रोटेरियन संदीप गुप्ता, रोटेरियन मनीष गोयल, सीए सुशील जैन, विनय गोयल, नरेश जैन, वंदना जैन, पिंकीगर्ग, ने भगवान गणेश के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर तीज महोत्सव का शुभारंभ किया।

मॉडल स्कूल सांपला में बच्चों ने मनाई हरियाली तीज

सांपला। मॉडल स्कूल में हरियाली तीज उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने संस्कृत कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिसमें हरियाणवी संस्कृति की झलक देखी। स्कूल में नन्हे मुन्ने बच्चों ने रंग बिरंगी पोशाक में जमकर मस्ती की। बच्चों ने झूला झूल कर तीज महोत्सव मनाया। इस मौके पर प्राचार्य नोमिता बत्रा ने हरियाणवी तीज के बारे में जानकारी दी। बच्चों को सम्मानित किया गया।

मानसरोवर हॉस्पिटल
REQUIRES
RMO 4
ICU STAFF 6
NURSING STAFF 4
PRO/MARKETING EXECUTIVE 2
COMPUTER OPERATOR 1
नजदीक पी.एन.बी. बैंक, विकास नगर के सामने, सोनीपत रोड, रोहतक
Tel. :- +91-1262-253500 Mobile: 9254302848, 9053005599

SHRI BALAJI INSTITUTE OF PARA MEDICAL SCIENCE
AUTHORIZED ADMISSION CENTRE OF MAA KAAMAL FOUNDATION
DR. S.K. SAINI Director
पिछले 25 वर्षों से लगातार जनसेवा में कार्यरत संस्थान।
फीस में 50% की विशेष छूट सभी के लिए सीमित समय के लिए
पहले आयें-पहले पायें। छात्रावास सुविधा। रविवार खुला है
DIPLOMA IN
G.N.M.
(MALE/FEMALE)
योग्यता :- 12th (किसी भी विषय में)
अवधि :- 3½ वर्ष | कुल सीटें :- 60
नियमित कक्षायें ऑनलाईन व ऑफ लाईन दोनों मोड में।
आजही अपने प्रमाण पत्रों के साथ आकर मिलें।
अतिशिघ्र आवश्यकता है:-
•G.N.M. -20
•MEDICAL LAB. TECH.-20
जो थ्योरी व प्रेक्टिकल दोनों करवा सके।
Dr. S.K. Saini (Director)
41/29, चाणक्य पुरी, शीला सिनेमा के पीछे, रोहतक-124001
9254233221

नीलामी सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बसाना (खण्ड कलानौर) ने गांव स्थित नायक चौपाल तथा वीटा डेयरी की कंडम बिल्डिंग के पुराने सामान को खुली बोली द्वारा बेचने का निर्णय लिया है। इसके लिए खुली बोली 28 जुलाई 2025 सोमवार, सुबह 11:00 बजे लाइब्रेरी के साथ वाली चौपाल में आयोजित की जाएगी। इसके लिए धरोहर राशि रु. 50,000/- (पचास हजार रुपये) होगी। बाकी शर्तें मौके पर सुनाई जाएंगी। इच्छुक व्यक्ति मौके का लाभ उठाएं।

कुसुम, ग्राम सचिव
बसाना खण्ड कलानौर
फोन : 9992972804

पिंकी, सरपंच,
ग्राम पंचायत बसाना
(रोहतक)

जमकर बरस रहा मानसून, 70 हजार हेक्टेयर में हुई धान रोपाई, कृषि विभाग का दावा, टारगेट पूरा

- फसल को लेकर अब किसान बरतें पूरी सावधानी, कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर ही करें दवाओं का प्रयोग

अमरजीत एस गिल ⏭रोहतक

सही समय पर मानसून की प्रचुर बारिश हुई तो जिले में इस बार 70 हजार हेक्टेयर में धान रोपाई हो गई है। ये दावा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने किया है। विभाग का कहना है टारगेट 99 प्रतिशत पूरा कर लिया गया है। आने वाले दिनों में मौसम फसल के अनुकूल बना रहा तो इस बार बंपर उत्पादन होने की उम्मीद है। पूरा उत्पादन तब ही होगा, जब फसल बीमारियों से भी बची रहेगी।

70 हजार हेक्टेयर में से तकरीबन 30-35 हजार हेक्टेयर में अगेती रोपाई हुई थी। अगेती रोपी गई फसल इस समय अच्छी बढ़वार की स्थिति में है। जबकि इसके बाद रोपी गई फसल भी लहला रही है। इस बार न फसल की जरूरत मुताबिक रुक-रुककर बरसात हुई तो बढ़वार के लिए तापमान भी अनुकूल रहा।

एक जून से लेकर 26 जुलाई तक रोहतक जिले में 191.4 के मुकाबले में औसतन 291.6 मिलीमीटर बरसात हो चुकी है। जोकि सामान्य से 47 प्रतिशत ज्यादा है।

महम में हुआ नुकसान

महम क्षेत्र में ज्यादा बरसात होने से 8-10 हजार एकड़ में फसल को काफी नुकसान हुआ। यहां अभी भी कई गांवों के खेतों में पानी भरा हुआ है। जिन खेतों से पानी की निकासी करवा दी गई, वहां दोबारा से फसल रोप दी गई है। लेट रोपी गई धान की किसानों न अगेती की बजाय ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। क्योंकि रोपाई में 15 से 20 दिन की देरी हुई है। बताया तो ये भी जा रहा है कि किसान अभी भी रोपाई कर रहे हैं। लेकिन इस समय रोपी गई फसल से उत्पादन अगेती की बजाय 10-15 प्रतिशत कम हो सकता है।

रोहतक। सुंदरपुर-समरगोपालपुर गांव के खेतों में शनै:शनै: ऐसे बढ़ रही है फसल।

लग सकती हैं ये बीमारियां

झुलसा या शीथ झुलसा, भूरा धब्बा रोग, जीवाणुधारी झुलसा, मिथ्या कंडुआ, सफेदा रोग और खैरा रोग धान में लगता है। कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक धान की फसल को बीमारियों से बचाने के लिए, समय पर रोकथाम और प्रबंधन उपाय करना आवश्यक है। इसमें रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन, बीज उपचार, संतुलित उर्वरक का उपयोग, और उचित जल प्रबंधन शामिल हैं।

डीएपी जरूर डालें

जो किसान इस समय भी रोपाई कर रहे हैं, वे एक सप्ताह बाद डीएपी का खेत में जरूर डाल दें। कुछ किसान तो रोपाई के समय ही डीएपी डाल देते हैं। इसके ज्यादा लाभ फसल में नहीं होता है। डीएपी का इस्तेमाल किसानों को सही समय पर करना चाहिए। आमतौर पर किसान धान की रोपाई के करीब एक सप्ताह बाद डीएपी का इस्तेमाल करते हैं। डीएपी के दाने काले और कठोर होते हैं, जो जल्द पानी में घुलते नहीं हैं। ऐसी स्थिति में जब किसान डीएपी का इस्तेमाल करते हैं तो वह जल्द घुल नहीं पाते और पौधे उसको ग्रहण नहीं कर पाते।

ये है फसल पकने की अवधि

राज्य में धान की फसल आमतौर पर 110 से 140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है, लेकिन यह किस्म और रोपाई के समय पर निर्भर करता है। कुछ किस्में 115-120 दिनों में पक जाती हैं, जबकि कुछ को 140-150 दिन भी लगते हैं। सुरजीत बासमती-1 एक लवण-सहिष्णु, उच्च उपज देने वाली धान की किस्म है जिसे पूसा 1460 किस्म से चयन द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म, जो पकने में 125-135 दिन लेती है। उपज 55-60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर देती है। इसकी रिकवरी प्रतिशत 67% है। 11.16 मिमी लंबाई के साथ, इसका दाना भी लंबा होता है। रोहतक एरिया में किसानों की प्राथमिकता किस्म 1121 होती है। ये बासमती किस्म है, इसके भाव दूसरी किस्मों के मुकाबले ज्यादा होते हैं।

99 प्रतिशत टारगेट हासिल कर चुके

तकरीबन 70 हजार हेक्टेयर में धान की रोपाई की जा चुकी है। हम 99 प्रतिशत टारगेट हासिल कर चुके हैं। अब रोपाई का समय भी बीत गया है।
-सुरेंद्र मलिक, उप निदेशक
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, रोहतक

दवा विक्रेताओं की सलाह कतई न मानें

जिले में धान एक अहम फसल है। मगर इस फसल पर हमेशा रोगों और कीटों का खतरा रहता है। कृषि विशेषज्ञों की मानें तो धान की खेती करने वाले किसानों को थोड़ा सावधान रहने की जरूरत है। अगर किसान धान फसल को लेकर सावधान रहेगें तो धान की फसल को रोग से बचाया जा सकता है। फसल में जब भी बीमारी के लक्षण दिखाई दे तो किसान अपने एरिया के कृषि वैज्ञानिकों से संपर्क करें। उन्हें बीमारी के लक्षण बताएं। वैज्ञानिक बीमारी लगे खेत की विजिट भी करवाई जा सकती है। बीमारी होने की स्थिति में जिस भी रसायन का स्प्रे या धूली करने की सलाह वैज्ञानिक दें, उसका ही प्रयोग करें। आमतौर पर किसान दवा विक्रेता की सलाह पर ही दवाईयों का प्रयोग फसल में करते हैं। दवा विक्रेता वे दवाएं किसानों को बेचते हैं, जिनमें उनका ज्यादा मुनाफा होता है। कई बार ऐसा भी होता है कि जिस दवाई की जरूरत नहीं होती है, वह भी दुकानदार किसान को थमा देता है।

तीज पर्व आज, बाजारों में रौनक, मेहंदी चूड़ी और घेवर की हुई जमकर खरीदारी

हरिभूमि न्यूज ⏭रोहतक

हरियाली तीज की पूर्व संध्या पर तैयारियों को लेकर शहर के बाजार गुलजार रहे। खासतौर पर महिलाओं में काफी उत्साह देखा गया। बाजारों में साड़ी चूड़ी की जमकर खरीदारी हुई। महिलाओं ने हाथों में मेहंदी लगवाई। तीज को लेकर शहर में जगह-जगह तीज स्पेशल कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया है। इसमें डीजे की धुनों पर महिलाएं थिरकेंगी एक-दूसरे को तीज की शुभकामनाएं देंगी। शहर के बाजारों की बात करें या फिर मॉल्स की हर तरफ तीज का असर दिखा। कहीं महिलाएं मेहंदी लगवाती दिखाई दीं तो कहीं मिठाई की दुकान पर घेवर खरीदने के लिए लंबी लाइन लगी रही।

तीज पर्व से जुड़ी मान्यता

श्रावणमास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को श्रावणी तीज कहा जाता है। मान्यता है इस दिन भगवती पार्वती सौ वर्षों की तपस्या साधना के बाद भगवान शिव से मिली थीं। इस दिन मां पार्वती की पूजा की जाती है। महिलाएं निर्जला रहकर व्रत करती हैं। यह व्रत पति की दीर्घायु के लिए रखा जाता है। भगवान शंकर-पार्वती की बालू की मूर्ति बनाकर पूजन किया जाता है। घर को साफ-स्वच्छ कर तोरण-मंडप आदि से सजाया जाता है। एक चौकी पर शुद्ध मिट्टी में गंगाजल मिलाकर शिवलिंग, रिद्धि-सिद्धि सहित गणेश, पार्वती की आकृति बनाई जाती है। उनका पूजन किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि आज के दिन जो सुहागन महिलाएं शिव और पार्वती की श्रद्धापूर्वक पूजा और मन से कामना करती हैं, उनका सुहाग लंबे समय तक बना रहता है।

खूब हुई चूड़ियों की खरीदारी

हरियाली तीज पर चूड़ी पहनने का भी महत्व है। तीज पर सुहागिन महिलाएं नई चूड़ियां पहनती हैं। बाजारों में कांच की लाल चूड़ियों की सबसे अधिक डिमांड है। लाल रंग के अलग-अलग शेड्स की चचूड़ियां पसंद की जा रही हैं। इसके अलावा नवविवाहिताएं हरे, पीले और नीले रंग की चूड़ियों को भी खूब खरीद रहीं। मार्केट में चूड़ियां की दुकानों पर महिलाओं की काफी भीड़ दिखाई दी। सभी ने अपनी पसंद की चूड़ियां पहनीं।

खूब बिकी घेवर और मिठाई

तीजको लेकर बाजार गुलजार रहे। कपड़े की दुकानों पर खासी भीड़ रही। मेहंदी लगाने वालों के पास भी महिलाओं की लंबी कतार रही। मिठाई की दुकानों घेवर घी की सिवइयों की जमकर खरीदारी हुई। महिलाओं ने नई चूड़ियां पहनीं नई कपड़ों की खरीदारी की। पूरा दिन बाजारों में काफी चहल-पहल रही। पर्व को लेकर बाजार गुलजार दिखे। लोगों में काफी उत्साह दिखाई दिया। तीज पर सबसे ज्यादा बिकने वाली मिठाई है घेवर। पर्व की पूर्व संध्या पर मिठाइयों की दुकान पर तरह-तरह के घेवर की खरीदारी हुई। घेवर और अन्य मिठाइयां लेने के लिए दुकानों पर काफी भीड़ रही। महिलाओं के अनुसार घेवर विवाहित जीवन में मिठास का प्रतीक होता है। जिस तरह घेवर की मिठास होती है, उसी तरह तीज की मिठास भी हमेशा उनके जीवन में घुली रहे।

पतंगों की दुकानों पर भीड़

तीजपर पतंग उड़ाने की परंपरा है। इसलिए पतंगों की दुकानों पर काफी भीड़ दिखाई दी। खासतौर पर बच्चों की। इस बार बच्चों को रिझाने के लिए तरह-तरह की पतंग में उतारी गई है। इसमें सबसे अधिक बाहुबली बजरंगी भाइजान पतंग लोगों को भा रही है। इसके अलावा कार्टून चित्रों वाली पतंग की खूब डिमांड है। इनमें छोटा भीम डोरोमोन प्रिंटेड पतंग की खरीदारी सबसे अधिक हो रही है। इसके अलावा बालीवुड स्टार फिल्म के नाम पर पतंगों के नाम रखे जा रहे हैं। पतंगों की डिजायन के साथ नए-नए एक्सपेरिमेंट किए गए हैं। इनमें फिश कट पतंग फ्लावर पतंग बच्चों को बहुत भा रही है। इसके अलावा सलमान, करीना, कैटरीना समेत अन्य बालीवुड प्रिंटेड पतंग भी बच्चों को भा रही हैं। इन पतंगों की कीमत पांच से 25 रुपये के बीच है। बच्चे बड़े जमकर पतंगों की खरीदारी कर रहे हैं।

बदला मनाने का तरीका

तीजमहिलाओं का मुख्य त्यौहार है। पुराने जमाने में जब प्रकृति चारों तरफ हरियाली की चादर सी बिछा देती है। तब जगह-जगह झूले पड़ते थे। त्यौहार पर स्त्रियां गीत गाती थीं। झूला झूलती थीं और नाचती थीं, लेकिन नए जमाने के साथ इस त्यौहार को मनाने की थीम बदल गई है। अब महिलाएं माडर्न ढंग से इस पर्व को सेलिब्रेट करती हैं। डीजे की धुन पर पर्व को सेलिब्रेट करने का ट्रेंड चला है। इसमें महिलाएं सज-धजकर डीजे की धुनों पर थिरकती हैं एक-दूसरे को शुभकामनाएं देती हैं।

आर्य समाज बोहर में आज मनाया जाएगा हरियाली तीज का त्योहार

रोहतक। आर्य समाज बोहर में शनिवार को आर्य समाज हरियाली तीज को धूमधाम से मनाने एवं समाज में नई जागरूकता लाने के लिए की गई। यह भी निर्णय लिया कि इस अवसर पर गांव के बुजुर्गों द्वारा वृक्षारोपण दे करवाया जाएगा। बैठक प्रातकाल 11 बजे की गई। इसकी अध्यक्षता आर्य समाज भवन के प्रधान धनी राम आर्य ने की। सभा को संबोधित करते हुए आर्य समाजी कृष्णदेव शास्त्री ने बताया कि पर्वों त्यौहारों तथा महात्माओं, महापुरुषों के जन्मोत्सव, विजयोत्सव, धर्मोत्सव को मनाना हमारी परिपाटी है। बैठक में निर्णय लिया गया कि आर्य समाज बोहर द्वारा हरियाली तीज का त्योहार 27 जुलाई रविवार को आर्य समाज बोहर में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। दोपहर में प्राचीन प्रथा अनुसार स्वादु पकमान बनाकर बड़ी महिलाओं, तथा वृद्ध पुरुषों को भेंट करना चाहिए। इससे वृद्ध पूजा के प्रचार की परिपुष्टि विनय भाव की दृढ़ता आपस में एक दूसरे के प्रति स्नेह की वृद्धि होकर सुख बढ़ता है। इस अवसर पर आर्य समाज के मंत्री अजय आर्य, मनजीत आर्य रविंद्र शास्त्री, यश देव शास्त्री बलबीर सिंह, प्रेम सिंह नांदल मौजूद रहे।

सतगुरु मंदिर सैमाण में महिलाओं ने नाच गाकर मनाई तीज

महम। सैमाण गांव के सतगुरु मंदिर में शुक्रवार को महिला श्रद्धालुओं ने तीज का त्योहार नाच गाकर मनाया। इस दौरान महिलाओं ने मंदिर में मत्था टेका और बाबा श्याम जी की पूजा अर्चना की। मंदिर में महिलाओं ने एक दूसरे को झूला झुलाया। महंत डॉ. सतीश दास ने महिला श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दिया। इस दौरान उन्होंने श्रद्धालुओं को लड्डू बांटे और उन्हें तीज के त्योहार की शुभकामनाएं दी। जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य डॉ. महंत सतीश दास ने कहा कि तीज का त्योहार बारिश के मौसम में मनाया जाता है और यह त्योहार हरियाली का प्रतीक है। डॉ. दास ने महिलाओं को पौधारोपण का महत्व बताया। कहा कि इस मौसम में अधिक से पौधे रोपित करने चाहिएं। पंपरागत परिधान पहकर ही महिलाओं को अपने त्योहार मनाने चाहिएं, ताकि नई पीढ़ी को त्योहारों के महत्व का पता चल सके। इस मौके पर महिला आयोग की पूर्व चेयरमैन डॉ. प्रतिभा सुमन, भाजपा जिला उपाध्यक्ष सुनीता डांगी, रेखा रोहिला व सरपंच उर्मिला समेत कई महिलाएं मौजूद थीं।

तीज सेलिब्रेशन में उमड़ी भीड़, तनिष्क रोहतक बना आकर्षण का केंद्र

रोहतक। तनिष्क रोहतक पर हाल ही में आयोजित तीज सेलिब्रेशन कार्यक्रम ने ग्राहकों और शहरवासियों का दिल जीत लिया। इस आयोजन में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया और स्टोर पर विशेष छूट व उपहारों का आनंद उठाया। कार्यक्रम के दौरान ग्राहकों के लिए कई आकर्षक ऑफ़र्स रखे गए थे, जिनमें डिस्काउंट, गिफ्ट्स, फन गेम्स और नेल आर्ट एक्टिविटी का खास इंतजाम किया गया था। बच्चों और बड़ों-दोनों ने इस उत्सव का जमकर आनंद लिया। स्टोर प्रबंधक ने बताया कि हमारे इस सेलिब्रेशन का उद्देश्य केवल बिक्री नहीं, बल्कि ग्राहकों को एक यादगार अनुभव देना था। इस त्यौहार पर झूला लगा कर इस त्यौहार में जान डाल दी और सभी के उत्साह और प्यार ने इस आयोजन को सफल बनाया। तनिष्क रोहतक द्वारा आयोजित पूरे आयोजन को सभी ग्राहकों द्वारा भी खूब सराहा गया, और आने वाले समय में ऐसे और आयोजन करने की योजना बनाई जा रही है।

रोहतक। तीज सेलिब्रेशन कार्यक्रम में हाथों में लगवाई मेहंदी दिखाते हुए। फोटो: हरिभूमि

रंश किआ में कॉरेन्स क्लाविस ईवी को लांच किया

हरिभूमि न्यूज ⏭रोहतक

रोहतक। नए अवतार कॉरेन्स क्लाविस ईवी को लांच करते पूर्व मंत्री मनीष कुमार ग्रोवर व निखार ग्रुप के सीएमडी राजिंदर बंसल। फोटो: हरिभूमि

शहर के प्रतिष्ठित संस्थान रंश किआ रोहतक में शनिवार को कॉरेन्स के नए अवतार कॉरेन्स क्लाविस ईवी को लांच किया। कॉरेन्स क्लाविस ईवी को पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर व निखार ग्रुप के सीएमडी राजिंदर बंसल के कर कमलों द्वारा लांच किया। कॉरेन्स क्लाविस ईवी के इस नए अवतार में बहुत ही यूनीक फीचर्स दिए गए हैं। किआ ने आज नई कॉरेन्स क्लाविस ईवी को चार वेरिएंट में लांच किया गया है।

इसमें 17 इंच के डायमंड कट अलॉय व्हील्स, सेकेंडी रो कैप्टेन सीट के साथ, ड्यूल पैनारोमिक सनरूफ, 6 एयर बैग्स स्टैंडर्ड, 2 टन इंटीरियर रूफरेल, आई पेडल शिफ्टर एंड रेगेन ब्रैकिंग, आल डिस्क ब्रेक, ऐदास लेवल 2-20 फीचर्स के साथ, 360 डिग्री कैमरा, 3 रो फुल्ली फोल्डेबल सीट साथ में 560 लीटर बूटस्पेस के साथ, 6 वे पावर ड्राइवर सीट, 26.62 इंच पैनारोमिक टच स्क्रीन, स्मार्ट क्रूज कंट्रोल, 64 अंबिएंस लाइट, 8 स्पीकर विद बॉस म्यूजिक साउंड सिस्टम, वायरलेस फ़ोन चार्जिंग, फर्स्ट इन सेगमेंट 7 सीटर ईवी, 0 टू 100 सिर्फ 8.4 सेकंड, प्राइस स्टार्टस फ्रॉम 18 लाख, स्मार्ट एयर प्यूरीफायर, बैटरी वारंटी 8 साल और 1.60 लाख किलोमीटर, रेंज 490 किलोमीटर इत्यादि फीचर्स इस गाड़ी को इस सेगमेंट में अलग ही दर्जा दिलाती है। इस मौके पर 5 कॉरेन्स क्लाविस गाड़ियों की बुकिंग की गई। इस गाड़ी का फ्रंट और बैक लुक बहुत ही मन लुभावन है। इस खास मौके पर डायरेक्टर रोहित बंसल, डायरेक्टर प्रीति बंसल, सुमित बंसल, दीपक जैन, अतुल बंसल, मनीष बंसल, इंडसइंड बैंक से सौरभ गोयल, जीएम सेल्स देवेंद्र राव, मुकेश खत्री, आदेश सक्सेना, सीअस अहलावत मौजूद रहे।

एचडी स्कूल खेड़ी महम के नन्हें मुन्ने बच्चों ने तीज के उपलक्ष्य पर उठाया पूल पार्टी का लुत्फ

महम। एच डी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल खेडी महम में पूल पार्टी व तीज महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। स्कूल प्राचार्या शालिनी गुप्ता ने बताया कि पूल पार्टी में नर्सरी से पहली कक्षा के बच्चों ने स्नान किया। संगीत की धुनों पर नृत्य किया व पासिंग द बॉल गेम खेला। बच्चे परंपरागत वेशभूषा में विद्यालय में आए। बच्चे अपने घर से लजीज व्यंजन भी साथ लेकर आए थे। बच्चों ने स्कूल परिसर में पतंग उड़ाया और झूला झूला। इस दौरान बच्चों ने संगीतमय धुनों पर नृत्य भी किया। स्कूल निदेशक कुलवंत नहरा ने कहा कि इन आयोजनों से बच्चों में भारतीय संस्कृति के परंपरागत मूल्यों का ज्ञान होता है तथा उनमें आपसी सहयोग की भावना को भी बल मिलता है। इस मौके पर स्कूल सचिव संजीव छिल्लर, उपप्राचार्या इंदु नहरा के साथ समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

नशे के खिलाफ जागरूक करते हुए जनवादी महिला समिति का सामाजिक न्याय जत्था रोहतक पहुंचा

हरिभूमि न्यूज ⏭रोहतक

जनवादी महिला समिति का सामाजिक न्याय जत्था भिवानी से चल कर शाम 4 बजे रोहतक के सुनारिया चौक पर स्थित सामुदायिक केंद्र पर पहुंचा। जत्थे का स्वागत जगबीरी, अनीता, बिमला, शकुन्तला सिंधु द्वारा किया गया। जत्थे में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगमति सांगवान, राज्य प्रधान सविता, राज्य कोषाध्यक्ष अमिता, पूर्व राज्य कोषाध्यक्ष राजकुमारी दहिया शामिल रहे। इस जत्थे का उद्देश्य नशा खोरी, बेरोजगारी, अंध विश्वास, सामाजिक भेदभाव , रुढ़िवाद, जातिवाद व साम्प्रदायिकता के खिलाफ जागरूकता पैदा करना है। जत्थे के उद्देश्य के बारे में बताते हुए महिला समिति की वरिष्ठ नेत्री राजकुमारी दहिया ने बताया कि अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति हरियाणा द्वारा संचालित सामाजिक न्याय जत्थे की शुरुआत भिवानी से की गई है, वहां से जत्था रोहतक पहुंचा है।

जो गीतों, नाटक, नृत्य, चमत्कारों का पर्दाफाश गतिविधि के माध्यम से कुरीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करेगा। जिला सांस्कृतिक समूह में बिमला हुड्डा, शकुन्तला सिंधु, तस्वीर, कविता, मीनाक्षी, मीना नरवाल व पूजा आदि मौजूद रहे। मुख्य वक्ता अनतर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल खिलाड़ी तथा जनवादी महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ . जगमति सांगवान ने कहा कि देश की आजादी के बाद आज देश की जनता के सामने बड़ी चुनौतियां हैं, भंयकर बेरोजगारी, महंगाई व सामाजिक-आर्थिक गैर बराबरी अपनी चरम सीमा पर है।

सांस्कृतिक जत्थे ने गीतों, नाटक व नृत्य के माध्यम से कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। हरियाणा विज्ञान मंच से सतबीर नागल ने अंधविश्वास पर चोट करते हुए विभिन्न गतिविधियों की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सैकडों महिलाओं व पुरुषों ने भाग लिया। इस अवसर पर सीआईटीयू राज्य उपाध्यक्ष सतबीर सिंह, सीटू के वरिष्ठ नेता रामचंद्र सिवाच, कमलेश लाहली, एसएफआई से अमित, रिटायर्ड कर्मचारी संघ से ओमप्रकाश कादयान, रमेश, अनीता, गायत्री, उषा, मुनमुन, मनीषा आदि स्थानीय गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

रोहतक। कार्यक्रम को सम्बोधित करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जगमति सांगवान।

महम। अलंकरण समारोह में विभिन्न उपाधि से नवाजे गए सही राम स्कूल के विद्यार्थी गुरुजनों के साथ। फोटो: हरिभूमि

सही राम स्कूल में हुआ अलंकरण समारोह, विद्यार्थियों को सौंपी जिम्मेदारी

महम। भराण रोड पर स्थित सहीराम सीनियर सेकेंडरी स्कूल महम में अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान स्कूल के चारों हाऊस के कैप्टन, हैड बॉय, हैड गर्ल, स्पोर्टस कैप्टन का चुनाव किया गया। चयनित किए गए विद्यार्थियों को स्कूल मैनेजमेंट के द्वारा बैज लगाकर सम्मानित किया गया। हीरो हाउस से खुशबू को कैप्टन का पदभार सौंपा गया। ऑफिसर हाउस से पल्लवी को कैप्टन बनाया गया। प्लेयर हाउस से सारिका और स्टार हाउस से अंशुल को कैप्टन का पदभार सौंपा गया। हैड गर्ल की उपाधि छात्रा दीक्षा को दी गई। राहुल नैन को हैड बॉय तथा स्पोर्ट्स कैप्टन के तौर पर बारहवीं कक्षा के छात्र आशीष को चुना गया। इन सभी विद्यार्थियों ने अपने पद की गरिमा को रखते हुए शपथ ली। कहा कि हम अपने कार्य को सच्ची लगन, मेहनत, कर्तव्यनिष्ठा व आत्मविश्वास के साथ निभाएंगे। मुख्य अतिथि के तौर पर स्माइल स्कूल के डायरेक्टर ब्रजमोहन पहुंचे। सहीराम स्कूल के डायरेक्टर डॉ. प्रदीप भारद्वाज, वीरमति बामल, प्रिंसिपल शीला दुहन, वीरेंद्र बामल व वाइस प्रिंसिपल वीना ने नव निर्वाचित छात्रों को बधाई व शुभकामनाएं दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अखिल भारतीय गोशाला पहरावर में आज होगा भंडारा व रागिनी कार्यक्रम

रोहतक। अखिल भारतीय गोशाला पहरावर में रविवार को भंडारे व रागिनी के कार्यक्रम का किया जाएगा। यह कार्यक्रम हरियाणा के उमंग भरे त्योहार हरियाली तीज के अवसर पर होगा और तीज महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। हरियाली तीज के शुभ अवसर पर राजू हलवाई, गांव पहरावर द्वारा भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर राग हरियाणा चैनल के माध्यम से रागनी कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा।

त्योहार हमारे सामाजिक जुड़ाव का माध्यम हैं, रिश्तों को सदैव महत्व देना ही भारतीय संस्कृतिः नीलम बत्रा

रोहतक। विधायक भारत भूषण बत्रा की धर्मपत्नी नीलम बत्रा का कहना है कि त्योहार हमारे सामाजिक रिश्तों को मजबूत करते हैं, इन्हें सामाजिक जुड़ाव का माध्यम भी कहा जा सकता है। भाग दौड़ भरी इस जिंदगी में भारतीय संस्कृति हमें सिखाती है कि सुखद जीवन के लिए रिश्तो को सदैव महत्व देना चाहिए। वे शुक्रवार को इनर व्हील क्लब द्वारा आयोजित तीज उत्सव कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया आज हमें त्योहारों के नाम पर केवल चित्र या चलचित्र दिख सकता है, इन त्योहारों की वास्तविक खूबसूरती परिवारों के साथ मिलने जुलने में है। उन्होंने कहा एक दूसरे की भावनाओं को समझना और उनका सम्मान करना जो सुखद अनुभूति देता है, उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उन्होंने कहा कि गूगल पर हम केवल शब्दों को सर्च कर सकते हैं, भावनाओं को महसूस करने के लिए एक दूसरे के साथ मिलना जुलना होगा, यही रिश्तों की खूबसूरती है। उन्होंने कहा कि पूर्वजों ने हमारे त्यौहारों को हमारी मान्यताओं को इस तरह से रचा है की हर रिश्ता एक दूसरे से सम्मान पाता है। स्कॉलर्स रोजरी स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम में इनर व्हील क्लब की प्रेसिडेंट कमलेश मलिक ने सभी सदस्यों का तीज उत्सव पर अभिनंदन करते हुए शुभकामनाएं दी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 27 जुलाई 2025

बुलेट ट्रेन के बाद अब आ रहा

हाइएस्ट स्पीड वाला बुलेट इंटरनेट

करीब साठ साल पहले दुनिया की पहली बुलेट ट्रेन बनाने वाले देश जापान ने अब बुलेट स्पीड वाले इंटरनेट को बनाने में सफलता हासिल की है। इस नई तकनीक से अविश्वसनीय तेज गति से डाटा ट्रांसफर हो सकेगा। इस नई तकनीक की क्या हैं विशेषताएं, इससे क्या होंगे भविष्य में फायदे, इनके बारे में आप भी डिटेल में जरूर जानना चाहेंगे।

{ कवर स्टोरी/ सुनील कुमार महला }

हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। जापान के एनआईसीटी ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिक 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने अविश्वसनीय स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया।

अविश्वसनीय है इसकी स्पीड

एक रिपोर्ट के अनुसार, नई तकनीक के द्वारा 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकेंड में डाउनलोड किया गया। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उज्ज्वल भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। बताते चलें कि जापान की इस लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबिट्स प्रति सेकेंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकेंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम है। जापान की यह स्पीड अमेरिका की वर्तमान इंटरनेट डाटा एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 मिलियन गुना अधिक है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से एक साथ 1 करोड़ 8 हजार वीडियो स्ट्रीम किए जा सकते हैं। यानी 10 लाख जीबी प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास, आने वाले समय में 6जी नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल्स और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

नई तकनीक का किया इस्तेमाल

जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम और उन्नत एंप्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता हासिल की है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं की टीम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सफलता पाई। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया, जिससे डेटा फुल पॉवर से फ्लो रखने में मदद मिली। इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकेंड में 10,000 से अधिक फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 टेराबिट्स प्रति सेकेंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था। लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया।

कई सेक्टर्स को मिलेगा लाभ

कहना गलत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआइ, 8के स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत और भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एआइ, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, आइओटी और ग्लोबल डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा।

जापान ने सिद्ध की श्रेष्ठता

बताते चलें कि दुबई, इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, हॉन्ग कॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर पर और आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है। कहना गलत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफरेंस को भी उजागर किया है। आज एआइ का दौर है। दुनिया में ज्यादातर काम-काज इंटरनेट तकनीक से किए जा रहे हैं। आने वाले समय में इंटरनेट और तकनीक का उपयोग निश्चित ही अधिक बढ़ेगा। ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में एआई, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा। लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है।

हमें भी करने होंगे प्रयास

जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप 10 देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है, जबकि एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। आज भारत लगातार डिजिटाइजेशन की ओर बढ़ रहा है। इंटरनेट ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोजगार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण होगा। इसके लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं। *

यंगस्टर्स को सर्वाधिक अट्रैक्ट करते हैं

देश के टॉप करियर मैगनेट सिटीज

प्राइवेट सेक्टर में अगर देश के टॉप करियर मैग्नेट सिटीज की बात करें तो बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई सबसे आगे हैं। इनके अलावा कुछ और शहर भी आगे बढ़ रहे हैं। वर्तमान समय और भविष्य के जॉब के लिहाज से हॉट सिटीज पर एक नजर।

{ जॉब ट्रेंड / कीर्तिशेखर }

करियर और लगातार ग्रोथ करने के लिहाज से इस समय भारत का सबसे अच्छा शहर बेंगलुरु को माना जाता है। सैलरी के मामले में भी इस समय देश के टॉप पांच शहरों में सबसे पहला नंबर बेंगलुरु का ही है और आने वाले अगले पांच सालों तक बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, चेन्नई और गुरुग्राम यही टॉप करियर शहर होंगे। अगले पांच सालों तक भी भारत के इन्हीं शहरों में सबसे अच्छा भविष्य तलाशने वाले युवक आकर्षित होंगे।

हाई सैलरी देने वाले शहर: 'जॉब्स एंड सैलेरीज प्राइमर फाइनेंशियल ईयर-2024' टीम लीज के हिसाब से बेंगलुरु शहर में औसत समग्र मासिक वेतन 29,500 रुपए है, जो कि देश के बाकी सभी महानगरों के मुकाबले 8 से 15 फीसदी ज्यादा है। इस मामले में एक अखबार ने भी हाल के दिनों में सैलरी और करियर के भविष्य के लिहाज से एक सर्वे किया, रेस फॉर टैलेंट। इस सर्वे में भी बेंगलुरु जूनियर, मिड और सीनियर यानी तीनों ही वेतन श्रेणियों में क्रमशः रुपए 7.2 लाख, रुपए 20.4 लाख और रुपए 37.2 लाख के औसत से शेष सभी भारतीय शहरों में शीर्ष पर है। रैंडस्टैड 2025 रिपोर्ट बताती है कि यहां जूनियर भूमिकाओं का सैलरी पैकेज देश के दूसरे सभी बड़े शहरों के मुकाबले 23 पर्सेंट तक ज्यादा है और मिड लेबल में यह 9 फीसदी ज्यादा है।

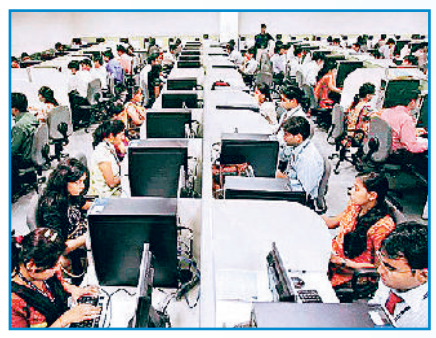

ये सिटीज भी बढ़ रहे हैं आगे: एक नए सर्वे (इनडीड) के मुताबिक यह बात भी सामने आ रही है कि हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत तेजी से अगले पांच सालों में सैलरी देने के मामले में देश के टॉप शहर बनने का मुकाबला करेंगे। लेकिन अभी तक ज्यादातर अनुमान यही है कि 2030 तक यह सेहरा बेंगलुरु के सिर पर ही रहेगा। हैदराबाद और चेन्नई के बाद जो तीसरा शहर इस मामले में चौंकाने वाली रफ्तार से, विशेषकर सैलरी के मामले में आगे बढ़कर आ रहा है, यह न तो दिल्ली है, न मुंबई, यह अहमदाबाद है। इसकी हाल के सालों में सैलरी ग्रोथ, दूसरे मेट्रो सिटीज के मुकाबले 20 से 25 फीसदी ज्यादा रही है। हालांकि सर्वे से निकला डाटा कोई तथ्य नहीं होता, जिसके आधार पर माना जाए कि यह बात सौ फीसदी सही है। यह भी एक अनुमान ही है, क्योंकि जहां दूसरे कई डाटा बेंगलुरु को सैलरी के लिहाज से देश का टॉप शहर बता रहे हैं, वहीं इनडीड यह तमगा चेन्नई को दे रहा है।

इसलिए बेंगलुरु है सबसे आगे: बेंगलुरु इस समय ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) हब बन चुका है। भारत के 40 फीसदी से ज्यादा जीसीसी बेंगलुरु में ही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, गोल्डमैन सैक्स जैसी 250 से ज्यादा बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने मुख्य कार्यकारी दफ्तरों के साथ बेंगलुरु में मौजूद हैं। यही नहीं ये तमाम कंपनियां अपना आरएंडडी (रिसर्च एंड डेवलपमेंट) सेंटर भी यही चलाती हैं। यहीं से नए उत्पादों और नवाचारों को बाजार में उतारती हैं। इसी तरह बेंगलुरु इस समय देश का स्टार्टअप और डीप टेक इकोसिस्टम का भी हब है। 44 फीसदी भारतीय यूनिकॉर्न बेंगलुरु में ही स्थित हैं या यहीं से निकले हैं। एआई, सेमिकंडक्टर और एयरोस्पेस केंद्रित स्टार्टअप बेंगलुरु में ही हैं और इन्हीं की बदौलत यह शहर वेतन प्रतिस्पर्धा में देश के दूसरे महानगरों के मुकाबले बहुत ऊपर है। बेंगलुरु में टैलेंट क्लस्टर बन चुका है, साथ ही यहां एक नई तरह की टैलेंट ओरिएंटेड जीवनशैली विकसित हो रही है। इस शहर में 20 लाख से ज्यादा आईटी पेशेवर कार्यरत हैं तथा ये दुनिया के गिने चुने उन शहरों में से एक बन चुका है, जो विश्व स्तरीय को-वर्किंग स्पेस मुहैय्या कराते हैं।

हैदराबाद भी है मुकाबले में: हैदराबाद और चेन्नई भी बहुत पीछे नहीं है। पिछले कुछ सालों में हैदराबाद ने फिर से तेज छलांग लगाई है और विभिन्न सर्वेक्षणों में भले वह अभी बेंगलुरु से थोड़ा नीचे हो, लेकिन माना जाता है कि अगले दो सालों में यानी 2027 तक हैदराबाद नौकरियां उपलब्ध कराने के मामले में बेंगलुरु को भी पीछे छोड़ सकता है। सिर्फ नौकरियां ही हैदराबाद में ज्यादा नहीं पैदा होंगी बल्कि आने वाले दिनों में अनुमान है कि यहां वेतन वृद्धि भी देश के दूसरे शहरों में सबसे ज्यादा होगी। हैदराबाद में वेतन वृद्धि का सबसे तेज रिकॉर्ड पहले रह चुका है और फिर से यह उसी दिशा में आगे बढ़ता लग रहा है। *

हाल के वर्षों में अंजान लोगों से मिलने, दोस्ती या लव रिलेशन बनाने में डेटिंग एप्स का यंगस्टर्स खूब यूज कर रहे हैं। इनकी पॉपुलैरिटी बढ़ने की वजह, इनके पॉजिटिव-नेगेटिव आस्पेक्ट्स के बारे में जानिए।

डेटिंग एप्स मिलने-मिलाने के नए ठिकाने

{ टेक्नोलाइफ/ लोकमित्र गौतम }

आज के दौर में मॉडर्न डेटिंग एप्स, संबंधों की दुनिया में अहम असर डाल रहे हैं। इस 21वीं सदी के दूसरे दशक में दुनिया में रिश्तों के निर्माण की प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन आया है। प्रेम पत्रों, पारिवारिक मेल-मिलापों और सामाजिक मेलों की जगह अब मोबाइल स्क्रीन और तरह-तरह के एप्स ने ले ली है। टिंडर, बंबल, हिंज, ओके कुपिड जैसे मॉडर्न डेटिंग एप्स ने आज रिश्तों की दुनिया को पूरी तरह बदल दिया है। ये तकनीकी बदलाव सिर्फ अमेरिका या यूरोप तक ही सीमित नहीं हैं, भारत भी पूरी तरह से इनकी चपेट में है, जहां सदियों पुरानी सांस्कृतिक विविधता और जीवन जीने की मजबूत व्यवस्था रही है। लेकिन आज डेटिंग एप्स ने रिश्तों की पारंपरिक दुनिया को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है।

जुड़े हैं करोड़ों यंगस्टर्स: आज दुनिया भर में लगभग 37 करोड़ लोग, जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं की है, विभिन्न तरह के डेटिंग एप्स से जुड़े हुए हैं। डेटिंग एप्स का किस कदर चलन बढ़ा है, इसका अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि आज अमेरिका में 30 फीसदी वयस्क लोग किसी न किसी डेटिंग एप का हिस्सा हैं। इन एप्स की शुरुआत तो दो अजनबियों के बीच प्रेम संबंध विकसित कराने के लिए एक मध्यस्थ के रूप में हुई थी, लेकिन आज तरह-तरह के डेटिंग एप्स दोस्ती, कैजुअल मीटिंग, विवाह के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

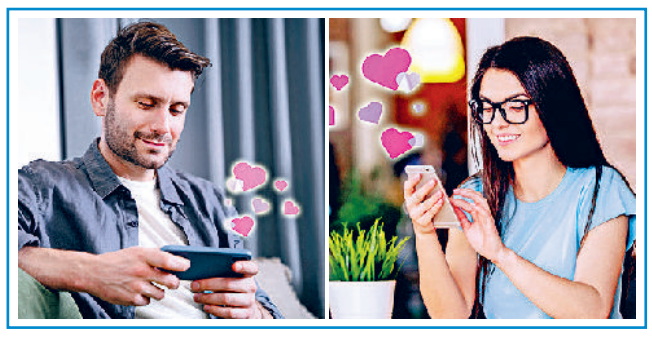

सबसे पॉपुलर डेटिंग एप्स: दुनियाभर में जिस डेटिंग एप की धूम है, उसका नाम टिंडर है। सौ से ज्यादा देशों में सक्रिय इस एप के अप्रैल 2025 तक साढ़े सात करोड़ रजिस्ट्रर्ड उपयोगकर्ता थे। दूसरे नंबर पर बंबल है, जो विशेष तौर पर महिलाओं को ध्यान में रखकर डेवलप किया गया है, क्योंकि इस एप में महिलाओं को रिश्ता आगे बढ़ाने के लिए पहला कदम रखने की आजादी है। यह एप किसी पुरुष को किसी महिला से संबंध जोड़ने के लिए निर्णय लेने की आजादी नहीं देता। इस एप में सिर्फ महिलाएं ही किसी के साथ को स्वीकार कर सकती हैं या उसे अस्वीकार कर सकती हैं। एक तीसरा पॉपुलर एप हिंज है, जो टेकलाइन के साथ गंभीर रिश्ते विकसित करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसके अलावा और लाखों सब्सक्राइबर की क्षमता रखने वाले एप्स हैं, उनमें- ओके कुपिड, ग्रिंडर और प्लेंटी ऑफ फिश डेटिंग एप्स हैं। ये सारे रिश्ते बनाने वाले एप्स अलग-अलग उम्र समूह को ध्यान में रख कर डिजाइन किए गए हैं।

इसलिए बढ़ रही पॉपुलैरिटी: डेटिंग एप्स की लोकप्रियता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि इनमें सुरक्षा और गोपनीयता की पुख्ता व्यवस्था होती है। इनमें एक एल्गोरिद्म की गुणवत्ता होती है, चाहे मैचिंग सही हो या न सही हो। लेकिन आमतौर पर एक ही एल्गोरिद्म के लोग इनके जरिए आपस में मिलते हैं। इनकी लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह है कि इन्हें रीजनल या स्थानीय भाषाओं का सपोर्ट सिस्टम भी हासिल है और सबसे बड़ी बात, इनमें एक खास किस्म का यूजर इंटरफेस होता है, जो इसको वास्तविक माहौल का आभास देता है।

पड़ रहा है रिश्तों पर असर: इन मॉडर्न एप्स का हमारे जीवन और रिश्तों की संवदेनशीलता पर भी असर पड़ा है। निश्चित रूप से इनके चलते अब दो युवा लोगों को आपस में मिलना आसान और सुरक्षित हो गया है। पहले कुछ गिने-चुने सौभाग्यशाली लोग ही होते थे, जिनके जीवन में प्यार, मोहब्बत की जगह होती थी। लेकिन इन डेटिंग एप्स के चलते अब कोई भी अपने अनुकूल दोस्ती के लिए साथी की तलाश कर सकता है।

नेगेटिव पहलू भी हैं मौजूद: हालांकि इन एप्स में सब कुछ अच्छा अच्छा ही नहीं है। इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। मसलन एप्स की दोस्ती या प्रेम में कमिटमेंट जैसी कोई चीज नहीं होती। बड़ी तादाद में लोग अपनी झूठी और नकली प्रोफाइल बनाकर एक-दूसरे से संपर्क साधते हैं और इस तरह कई तरह के अपराधों को अंजाम देते हैं। *

{ छोटी कहानी / गोविंद भारद्वाज }

कई वर्ष बाद गोपाल अपने गांव लौटा था। वहां उसकी मुलाकात अपने बचपन के दोस्त रामू से हुई। उसका कटा हाथ देखकर गोपाल को बहुत दुख हुआ। लेकिन रामू को अपने दुख से ज्यादा आत्मग्लानि महसूस हुई।

दिव्यांग

बरसों बाद गांव जाने का मौका मिला। तांगा स्टैंड अब टैंपो स्टैंड में बदल चुका था। टैंपो से उतरते ही अपने नाम की आवाज कानों में पड़ी, 'गोपाल...!' मैंने पलट कर देखा। सामने एक चाय की गुमटी थी, जो धुएं में बिल्कुल काली दिखाई दे रही थी। मैंने टैंपो वाले को बीस का नोट दिया और उस दुकान की तरफ बढ़ गया। 'आ भई...आ.. बहुत दिनों बाद गांव की याद आई तुझे।' उसने मुझे दुकान के अंदर बुलाते हुए कहा। मैंने उससे हाथ मिलाने के लिए अपना दायां हाथ आगे बढ़ाया। उसने हाथ तो अपना बढ़ाया, लेकिन दायां नहीं बायां। मेरी नजर उसके दाएं कंधे की ओर गई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। 'यह क्या हुआ रामू?' मेरे मुंह से निकला। 'भाई गोपाल, मुझे माफ कर दे...।' रामू की आंखें नम हो आईं। 'किस बात की माफी भाई...?' मैंने उसके बाएं हाथ को पकड़ते हुए पूछा। 'दोस्त, तू मुझे जी भर कर लूला (हाथ से दिव्यांग) कह सकता है...।' वह रुआंसा हो गया। मैं समझ गया था, वह क्या कहना चाह रहा है? मैं अतीत में चला गया। बात उन दिनों की है, जब मैं गांव में रहा करता था। मेरी मित्र मंडली में यूं तो बहुत से दोस्त थे। सबके सब मुझे प्यार से गोपाल कह कर बुलाते थे, लेकिन रामू एक ऐसा दोस्त था, जो मुझे लंगड़ा (पैर से दिव्यांग) कह कर बुलाता था। दरअसल, मैं जब छह महीने का था, तब मेरे बाएं कूल्हे पर एक फोड़ा हो गया था, जो बाद में नासूर बन गया था। उसी के चलते मेरा बायां पैर खराब हो गया। मैं हमेशा के लिए दिव्यांगता की श्रेणी में आ गया।

गांव से चार किलोमीटर दूर दूसरे गांव में सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल था। वहां हम सब दोस्त मिलकर नौवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ते थे। तब रामू सबके सामने मुझे लंगड़ा कह कर ही पुकारता था। अन्य दोस्त उसको खूब समझाते कि गोपाल को 'लंगड़ा' मत बुलाया कर, लेकिन वह था कि मानता नहीं था। स्कूल के शिक्षक भी उसे इस बात के लिए डांटते, लेकिन वह अपनी आदत से बाज नहीं आता।

एक दिन तो तब हद हो गई, जब उसने प्रिंसिपल साहब के सामने ही मुझे लंगड़ा कह दिया। उन्हें उसकी यह बात बहुत बुरी लगी, उन्होंने उसे पीटा भी। प्रिंसिपल साहब की पिटाई से तो वह और ज्यादा खफा हो गया। अब वह मुझे जब देखो तब लंगड़ा-लंगड़ा कहकर चिढ़ाने लगा। मेरी भी आदत सी हो गई थी, लंगड़ा सुनने की। मैं कभी नहीं चिढ़ता था। लेकिन दूसरों को उसका लंगड़ा कहकर बुलाना अच्छा नहीं लगता था। दसवीं पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए शहर चला आया। एमए अंतिम वर्ष के इम्तिहान खत्म हो चुके थे। इसलिए मैंने सोचा क्यों न गांव जाकर पुराने मित्रों से मिला जाए।

'क्या हुआ कहां खो गया गोपाल ...?' रामू ने मेरे हाथ को झटका देते हुए पूछा। 'कुछ नहीं यार, मैं अपने बचपन में खो गया था। खैर बता तेरे दांए हाथ को क्या हुआ?' मैंने पास में पड़े स्टूल पर बैठते हुए पूछा। 'मत पूछ... जैसी करनी वैसी भरनी...। मैंने तुझे कभी तेरे नाम से नहीं बुलाया... तुझे लंगड़ा ही कहा। अब तू मुझे लूला कह सकता है।' उसने भर्राई आवाज में कहा।

'छोड़ यार पुरानी बातों को...तू मेरे लिए रामू है... और रामू ही रहेगा... पर तुमने बताया नहीं यह सब कैसे हुआ?' मैंने पूछा।

रामू चाय का कप मेरे हाथ में थमाते हुए बोला, 'दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद मैं अपने पिताजी के साथ खेती करने लगा। दो साल पहले गेहूं निकालने के लिए खेत में थ्रेसर (अनाज निकालने की मशीन) लगा हुआ था। देर रात तक थ्रेसर पर खड़े रहने की वजह से नींद की झपकी आ गई। मेरा दायां हाथ मशीन में आ गया। जब मुझे होश आया तब मैं अस्पताल में भर्ती था। मेरा दायां हाथ कट चुका था।' 'फिर यह दुकान?' मैंने पूछा।

'दुर्घटना के लगभग एक साल बाद पिताजी ने मेरी छोटी-सी दुकान खुलवा दी। बस यहीं से थोड़ा बहुत कमाकर अपना गुजारा कर लेता हूं... तू बता क्या कर रहा है आजकल?' उसने अपनी बात खत्म करते ही पूछा। मैंने बताया, 'एमए का इम्तिहान दिया है। आगे प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने की सोच रहा हूं। मेरा लक्ष्य यही है आईएएस बनूं।' मैं उठ कर चलने लगा तो रामू मेरे गले लग गया, बोला, 'गोपाल, अपने दोस्त को माफ तो कर दिया ना...।' मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'रामू मैं तेरे लिए तो अभी भी लंगड़ा ही हूं... तेरे मुंह से गोपाल अच्छा नहीं लगता।' *

प्रेमचंद की धरोहर कहानियां

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

आगामी 31 जुलाई को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 145वीं जयंती मनाई जाएगी। उनके जाने के लगभग नौ दशक गुजर जाने के बाद आज भी उनका कथा साहित्य अगर प्रासंगिक बना हुआ है तो ऐसा उनकी गहन दृष्टि और सामाजिक-राष्ट्रीय सरोकार से प्रतिबद्धता के कारण ही संभव हुआ है। हाल में प्रकाशित होकर आईं ख्यात आलोचक-संपादक पल्लव के संपादन में दो पुस्तकें 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' और 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' इस बात को और प्रमाणित करती हैं। 'प्रेमचंद की दलित कथाएं' पुस्तक में संकलित 15 कहानियां आजादी से पहले के भारतीय समाज में धंसी हुई जातिगत मानसिकता को न केवल उजागर करती हैं, बल्कि उस दौर की सामाजिक कुरूपता को भी कठघरे में खड़ा करती हैं। 'सद्गति, ठाकुर का कुआं, कफन, जुरमाना, मंदिर' और 'दूध का दाम' जैसी कहानियां उस काल के सामाजिक विद्रूप को अनावृत करने के साथ आज भी याद आ जाती हैं, जब इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने के बाद भी जाति आधारित भेदभाव से उपजी घटनाएं हमारे समाज में घटित होती हैं।

दूसरी पुस्तक 'प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं' में सोलह ऐसी कहानियां चयनित की गई हैं, जिनमें स्वाधीनता से पहले के भारतीय जनमानस में व्याप्त आजाद होने की आकुलता नजर आती है। इस पुस्तक में संकलित 'सुहाग की साड़ी, जुलूस, बौड़म' और 'शतरंज के खिलाड़ी' आदि कहानियां इस बात को प्रमाणित करती हैं कि पराधीन भारत के आमजन में आजाद होने की कैसी उत्कंठा थी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसक आंदोलन के प्रति प्रेमचंद के मन में कितनी निष्ठा थी, इस बात को भी ये कहानियां प्रमाणित करती हैं। ये दोनों पुस्तकें शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होंगी ही, प्रेमचंद के वैचारिक वैशिष्ट्य और सरोकारों को भी समझने में सहायक सिद्ध होंगी। *

पुस्तकें: प्रेमचंद की दलित कथाएं और प्रेमचंद की स्वतंत्रता संग्राम कथाएं,
संपादक: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए (प्रत्येक), **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

अमेरिकन रेन डांस

बन बंग फाई, थाइलैंड

वर्षा के लिए प्रार्थना करते तिब्बती बौद्ध भिक्षु

वोडू वर्षा नृत्य, हैती

इन दिनों अपने देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून सक्रिय है, खूब बारिश हो रही है। लेकिन कई बार समय पर बारिश नहीं होती है। देश, दुनिया के कई हिस्सों में बारिश न होने पर उसके आह्वान को लेकर कई परंपराएं प्रचलित हैं। यहां बता रहे हैं कुछ ऐसी ही अजब-अनूठी परंपराओं के बारे में।

बहुत अजब-अनोखी हैं दुनिया में बारिश के आह्वान की रस्में

ट्रेडिशंस
शिखर चंद जैन

एक तरफ जहां अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों में लोग भगवान से बारिश रोकने की प्रार्थना करते हैं, वहीं बारिश की कमी वाले दुनिया के कई देशों में लोग बारिश के लिए बादलों, देवताओं और ईश्वरीय शक्तियों का आह्वान करते हैं। इसके लिए तरह-तरह की धार्मिक रीतियों का पालन करते हैं।

अमेरिकी जनजातियों का वर्षा नृत्यः अमेरिका के मैदानी हिस्सों में रहने वाली कई जनजातियों के लोग वर्षा नृत्य करते हैं। यह वर्षा के आह्वान का प्राचीन अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में पारंपरिक पोशाक और पंखों वाले मुकुट या टोपी पहन कर, हाथों में चील के पंख लिए, घंटों तक एक घेरे में गाना, ढोल बजाना और नृत्य करना शामिल है। ऐसा माना जाता है कि वर्षा नृत्य से वर्षा के देवता खुश होकर वर्षा करते हैं।

बन बंग फाई (रॉकेट महोत्सव): थाईलैंड के इसान रीजन और उत्तर-पूर्वी थाईलैंड के कुछ इलाकों में हर वर्ष जून महीने में यह अनोखा रॉकेट त्योहार खेती के मौसम से ठीक पहले मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान ग्रामीण लोग और भिक्षु, बांस या लोहे के पाइप से रॉकेट बनाने के लिए एकत्रित होते हैं। इस उत्सव में मंदिर या आस-पास के अन्य इलाकों के चारों ओर एक जुलूस निकाला जाता है, जिसके बाद लोग आकाश में रॉकेट छोड़ते हैं। यह क्रिया 'फाया थाएन' नामक देवता को अर्पित की जाती है, जिनके बारे में माना जाता है कि वे मौसम के अनुसार बारिश का होना सुनिश्चित करते हैं।

आदिवासी बच्चों का मेंढक नृत्यः ऑस्ट्रेलिया देश के आदिवासी, हजारों सालों से मेंढक नृत्य करते आ रहे हैं। यह नृत्य शुष्क मौसम में किया जाता है, जब मेंढक शांत होते हैं। यह मेंढकों को जगाने और बारिश के आह्वान के लिए किया जाता है। इस नृत्य में मेंढकों की गतिविधियों की नकल करना, मेंढक जैसी आवाजें निकालना, शरीर पर रंग, जानवरों की खाल पहनना, भाले और बूमरैंग लेकर चलना शामिल होता है।

नांग मेव समारोहः थाईलैंड में ही बन बंग फाई के अलावा, थाई किसानों द्वारा देश के मध्य और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में वर्षा के आह्वान के लिए नांग मेव समारोह भी मनाया जाता है। जब बुवाई का मौसम आता है, तो किसान अपने गांवों या मंदिरों में नांग मेव (बिल्ली) की परेड निकालते हैं, इस उम्मीद में कि जब बारिश की सबसे ज्यादा जरूरत हो, तब बारिश हो। ऐसा माना जाता है कि बिल्लियां बारिश से डरती हैं और अगर इस समारोह के दौरान कोई बिल्ली रोती है, तो इसका मतलब माना जाता है कि बारिश होने वाली है।

नांग मेव समारोह, थाईलैंड

केबो-केबोआनः इंडोनेशिया में केबो-केबोआन पारंपरिक समारोह मनाया जाता है। यह पूर्वी जावा के अलियान और अलस्मलांग गांवों में बान्यूवांगी लोगों द्वारा सदियों से मनाया जाता रहा है। यह समारोह बारिश, अच्छी फसल और शुष्क मौसम में आपदाओं से सुरक्षा की प्रार्थना के लिए किया जाता है। ग्रामीणों का मानना है कि इस परंपरा का पालन ईश्वर की कृपा के प्रति उनकी कृतज्ञता का प्रतीक है और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए पूर्वजों की आत्माओं का आह्वान करता है। भैंसों को इस पारंपरिक समारोह का मुख्य प्रतीक माना जाता है क्योंकि वे किसानों की गतिविधियों और चावल के खेती से गहराई से जुड़े होते हैं। समारोह के दौरान, लोग भैंसों (केबो) की वेशभूषा धारण करते हैं और उनकी भूमिका निभाते हैं, क्योंकि इसमें कोई वास्तविक जानवर शामिल नहीं होता। समारोह की शुरुआत प्रार्थना और टुम्पेंग नामक व्यंजन खाने से होती है। टुम्पेंग, जीवन चक्र के प्रतीक माने जाने वाले, चावल के 12 शंकु के आकार के ढेरों से बना एक व्यंजन होता है।

भिक्षुओं द्वारा मंत्रोच्चारः जब भी सूखा पड़ता है या समय पर बारिश नहीं होती है तो तिब्बती भिक्षु, आकाश और जल के देवी-देवताओं से प्राचीन मंत्रों और प्रार्थनाओं का जाप शुरू कर देते हैं। भिक्षुओं का मानना है कि उनके जाप से वातावरण शुद्ध होता है और वर्षा के लिए आवश्यक परिस्थितियां बनती हैं। यह जाप अकसर पर्वत शिखरों पर किया जाता है।

वोडू वर्षा नृत्यः हैती के लोगों में बारिश बुलाने का अनुष्ठान वोडू वर्षा नृत्य कहलाता है। यह सूखे के दौरान किया जाने वाला एक अनोखा नृत्य है। इसके जरिए कलाकार वोडू धर्म की पवित्र आत्माओं (लोआ) को बारिश के लिए आमंत्रित करते हैं। *

भारत में वर्षा संबंधी विभिन्न समारोह

वरुण यज्ञ अनुष्ठानः वरुण यज्ञ अनुष्ठान, वैदिक हिंदू वर्षा आह्वान अनुष्ठान है। यह आज भी भारत के कई हिस्सों में किया जाता है। यह अनुष्ठान सनातन धर्म में जल के देवता वरुण को समर्पित है। इसमें मंत्रोच्चार, अग्नि में आहुति देना और वर्षा हेतु प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। यह अनुष्ठान आमतौर पर मानसून के मौसम में उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहां बरसात की कमी होती है।

अभिषेकम अनुष्ठानः दक्षिण भारत के किसान विशेष रूप से यह वर्षा-आह्वान अनुष्ठान अपनी उपज बढ़ाने के लिए, वर्षा की प्रार्थना हेतु करते हैं। यह अनुष्ठान हिंदू धर्म में वर्षा के देवता, भगवान इंद्र को समर्पित है। इसमें उनकी मूर्ति पर जल और दूध चढ़ाया जाता है। इसका उद्देश्य वर्षा के देवताओं को प्रसन्न करना और वर्षा लाना है। यह आमतौर पर गर्मी के महीनों में किया जाता है, जब वर्षा कम होती है।

मेंढकों का विवाहः देश के कई हिस्सों, विशेष रूप से उत्तर, मध्य-पश्चिमी राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़ आदि के ग्रामीण और कई आदिवासी इलाकों में मान्यता है कि बारिश न होने पर अगर सामूहिक तौर पर मेंढक-मेंढकी का विवाह करवा दिया जाए तो बारिश होती है।

बढ़ती महंगाई के दौर में किसी एक नौकरी पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय अगर आप पोर्टफोलियो करियर चॉइस अपनाते हैं, तो इससे आपके करियर ग्रोथ और इनकम के कई रास्ते खुल सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर, इसके ऑप्शंस और बेनिफिट्स के बारे में जानिए।

आज के दौर की जरूरत है पोर्टफोलियो करियर

प्रोफेशनल लाइफ / अंजू जैन

एक जमाना था जब लोग बड़े गर्व से बताते थे कि उन्होंने किसी एक ही बिजनेस फर्म या बड़ी कंपनी में नौकरी शुरू की और 35-40 साल तक काम करके वहीं से रिटायर हो गए। वो दौर पिछली सदी का था। तब किसी कंपनी में आप समर्पण, मेहनत और ईमानदारी से काम करते थे तो आपको नौकरी खोने का इतना डर नहीं होता था। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। कंपनियां जब ले ऑफ करती हैं तो कोई भी उसकी चपेट में आ सकता है। एंप्लॉई भी जहां ज्यादा सैलरी या अच्छा पैकेज देखता है, वहीं चला जाता है। दिनों-दिन बढ़ती कॉस्ट ऑफ लिविंग, शिक्षा और चिकित्सा पर बढ़ा हुआ खर्च आदि को देखते हुए एक जॉब पर पूरी तरह निर्भर रहना ना तो सुरक्षित है, ना बुद्धिमानी। आय के एक से ज्यादा स्रोत रखना और अपनी मल्टीपल प्रोफेशनल आइडेंटिटी रखना आज के वक्त की जरूरत है। इसलिए आपको भी पोर्टफोलियो करियर माइंडसेट के बारे में सोचना चाहिए।

पोर्टफोलियो करियर क्या हैः पोर्टफोलियो करियर यानी एक व्यक्ति द्वारा अपनी स्किल्स का प्रयोग करते हुए आय के कई स्रोतों की व्यवस्था करना। इसके अंतर्गत एक फुल टाइम जॉब के साथ-साथ या फिर बिना फुल टाइम जॉब के अलग-अलग कई काम किए जाते हैं। पोर्टफोलियो करियर में साइड हसल, एकाधिक पार्ट टाइम जॉब्स, साइड बिजनेस या फ्रीलांसिंग शामिल हैं।

उदाहरण के लिए एक नौकरीशुदा ग्राफिक डिजाइनर एक से अधिक व्यवसाइयों के लिए लोगो बना सकता है। एक अकाउंटेंट पूर्णकालिक रूप से एक फर्म में काम कर सकता है, साथ ही अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकता है।

पोर्टफोलियो करियर के फायदेः पोर्टफोलियो करियर के कई फायदे होते हैं।

बैलेंस्ड पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफः पोर्टफोलियो करियर अपनाने वाले लोग अपनी सुविधानुसार टाइम टेबल और अपनी पसंद का काम चुन सकते हैं। इसमें अकसर घर से काम करने की छूट होती है, जिससे विभिन्न गतिविधियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों या अन्य कामों के लिए आपको समय मिल जाता है। इससे आपको बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस प्राप्त करने में मदद मिलती है।

एक्सट्रा इनकमः पोर्टफोलियो करियर के साथ आप कई सोर्सेज से इनकम प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में अगर आपको अचानक नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब भी आपका सोर्स ऑफ इनकम बंद नहीं होगा।

नो बाउंडेशनः पोर्टफोलियो करियर के साथ आपको किसी खास तरह की नौकरी के बंधन में नहीं रहना पड़ता। आप अपनी रुचियों को समय देने और उन्हें पोषित करने वाले किसी करियर को परख और चुन सकते हैं। पोर्टफोलियो करियर आपको किसी भी चीज के लिए प्रतिबद्ध हुए बिना विभिन्न अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है।

पोर्टफोलियो करियर शुरू करें ऐसेः अपना पोर्टफोलियो करियर आप कुछ इस तरह शुरू कर सकते हैं।

प्रॉपर प्लानिंग बनाएंः अगर आप अपना पोर्टफोलियो करियर शुरू करने का फैसला करते हैं तो इसकी प्रॉपर प्लानिंग बनाएं और उस पर अमल करें। आप रेग्युलर करियर के साथ-साथ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं या फिर सिर्फ पोर्टफोलियो करियर भी अपना सकते हैं।

अपनी स्किल्स को समझेंः इसके लिए अपनी क्रिएटिविटी, स्किल्स और इंट्रेस्ट पर विचार करें ताकि आप यह निर्धारित कर सकें कि आप किस तरह के काम से इनकम के लिए इनका उपयोग करना चाहते हैं। इसके बाद ही उस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं। इससे सफल होने के चांसेज काफी बढ़ जाएंगे।

लोगों के साथ नेटवर्क बनाएंः अपने पोर्टफोलियो करियर को विकसित करने के लिए आप अपने पुराने सहकर्मियों, सहपाठियों, दोस्तों और ग्राहकों के साथ फिर से जुड़ें। उन्हें अपने काम के बारे में बताएं। संभव है कि वे आपके लिए उपयुक्त अवसरों के बारे में बता सकें। वे आपको सलाह, संपर्क, सहायता या यहां तक कि काम भी दे सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक गंगा को भारतीय संस्कृति में पूज्य एवं जीवनदायिनी माना जाता है। इसका केवल धार्मिक ही नहीं, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व भी बहुत अधिक है। भारतभूमि की जीवनधारा गंगा के प्रवाह और महत्ता पर एक दृष्टि।

सभ्यता-संस्कृति की वाहक पुण्यसलिला-जीवनदायिनी गंगा

नदी गाथा
वीना गौतम

नदियों के किनारे ही संसार की सभी सभ्यताएं, संस्कृतियां विकसित हुई हैं, फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति लोगों की उदासीनता के कारण धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब तो नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ी को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती में इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फूलती-फलती रहे।

भारतीय सभ्यता-संस्कृति की पहचानः गंगा भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी ही नहीं है। यह भारतीयता की पहचान और देश की जीवनरेखा भी मानी जाती है। भारतीय जनमानस में इस नदी के प्रति असीम श्रद्धा है। यह न केवल हमें जल प्रदान करती है बल्कि आस्था, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय गौरव की भी वाहक है। देश की सबसे महत्वपूर्ण और पूज्यनीय नदी गंगा को भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवनरेखा माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि गंगा में सिर्फ पानी नहीं, एक समूची सभ्यता प्रवाहमान है।

गंगा नदी का प्रवाह तंत्रः गंगा नदी की उत्पत्ति हिमालय के गोमुख हिम नदी से होती है, जहां इसे भागीरथी कहा जाता है। प्रवाह के क्रम में अलकनंदा, जब इस भागीरथी में आ मिलती है, तो उसके बाद से इन दोनों नदियों का संगम गंगा कहलाने लगता है। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है। इसकी लंबाई 2525 किलोमीटर है। गंगा के बेसिन में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 26 प्रतिशत से ज्यादा भाग आता है। गंगा जिन अपनी सहायक नदियों के चलते देश की सबसे महान नदी बनती है, उन सहायक नदियों में यमुना, घाघरा, गंडक, कोसी और सोन नदी प्रमुख हैं। गंगा उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल से होकर बहती है तथा अंत में बांग्लादेश में प्रवेश कर पद्मा के रूप में बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।

बसे हैं कई तीर्थस्थलः गंगा नदी देश के अनेक महत्वपूर्ण शहरों से होकर बहती है। साथ ही यह देश के कई पवित्र तीर्थस्थलों की पुण्य सलिला भी है। गंगा नदी के किनारे ही हरिद्वार, ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयागराज और गंगा सागर जैसे पवित्र तीर्थस्थल हैं, जो धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता के आधार हैं।

एक जीवंत भौगोलिक संसाधनः भौगोलिक दृष्टि से गंगा बहुत ही महत्वपूर्ण नदी है। गंगा घाटी का क्षेत्र भारत की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र में गंगा के जल से सिंचाई, जल परिवहन और पेय जल की लगभग समूची व्यवस्था बनती है, जो इसे एक जीवंत भौगोलिक संसाधन के रूप में बदलती है। गंगा घाटी क्षेत्र में बसने वालों के लिए गंगा सिर्फ एक नदी नहीं बल्कि जीवनधारा है।

धार्मिक-सांस्कृतिक महत्वः हिंदू धर्म में गंगा को केवल नदी या जलधारा नहीं माना जाता, बल्कि इसे माता, देवी और मोक्षदायिनी का दर्जा प्राप्त है। गंगा के जल को अमृत के तुल्य माना जाता है। इसलिए भारत के हर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान में गंगा जल का इस्तेमाल होता है। यही नहीं, मोक्ष की कामना रखने वाले हर धार्मिक हिंदू की यह ख्वाहिश होती है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसके मुंह में गंगा जल की कुछ बूंदें डाली जाएं और उसकी चिता की राख को गंगा नदी में प्रवाहित किया जाए। आरंभ से लेकर आज तक गंगा भारतीय मानस में आस्था एवं श्रद्धा के रूप में प्रवाहित हो रही है। गंगा का उल्लेख वैदिक ग्रंथों से लेकर भारतीय साहित्य, कला, संगीत और लोककथाओं में व्यापक रूप से मिलता है। गंगा का उल्लेख हमारे राष्ट्रगान में भी मिलता है।

गंगा का आर्थिक महत्वः भारत का लगभग 40 फीसदी हिस्सा गंगा के बेसिन क्षेत्र में बसता है और यह क्षेत्र देश के कृषि, उद्योग और व्यापार की दृष्टि से सबसे समृद्ध है। गंगा का जल उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल तथा झारखंड के एक बड़े हिस्से में सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है। गंगा, यमुना के दोआब की भूमि गेहूं, गन्ना और दलहन की खेती के लिए मशहूर है। हरित क्रांति की सबसे बड़ी प्रयोग भूमि यही गंगा का मैदान था।

गंगा के किनारे कोलकाता, कानपुर, भागलपुर, वाराणसी और पटना जैसे देश के कई औद्योगिक नगर बसे हैं। चमड़ा, वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण, बिजली संयंत्र, कागज उद्योग जैसे कई औद्योगिक संयंत्र स्थापित हैं। हाल के दशकों में राष्ट्रीय जलमार्ग-1 परियोजना के तहत हल्दिया से वाराणसी तक जल परिवहन को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे गंगा सस्ते और एक पर्यावरण अनुकूल जल परिवहन का भी आधार बन गई है।

चुनौतियां हैं कईः गंगा के समक्ष आज अनेक चुनौतियां भी हैं, जिन्हें दूर किया जाना आवश्यक है। दरअसल, गंगा के जल पर दुनिया में सबसे ज्यादा जनसांख्यिकी दबाव है। जितने लोग गंगा नदी पर आश्रित हैं, उतने लोग दुनिया में किसी और नदी पर अपने जीवनयापन और सभी तरह की पहचान के लिए आश्रित नहीं हैं। इसलिए गंगा पर अतिरिक्त जन दबाव, औद्योगिक प्रदूषण, अपशिष्ट जल के साथ-साथ धार्मिक कर्मकांडों एवं प्रदूषण की भी मार है। गंगा नदी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। नमामि गंगे मिशन जैसी योजना चलाई जा रही है। अनेक जलशुद्धि सयंत्रों की स्थापना की गई है। *

हिंदी फिल्में नायक, नायिका और खलनायकों के बॉलीवुड में अपने पैर जमाने में मदद करती रही हैं, एक बड़ी पहचान दी है। इसके साथ इनके पैरों का फिल्मों में बहुत ही करिश्माई अंदाज में फिल्मांकन हुआ, जिसने सस्पेंस, रोमांच, एक्शन, रोमांस क्रिएट करके फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने में इंपॉर्टेंट रोल अदा किया है। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

पर्दे पर पैरों का करिश्मा

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी सिनेमा की शुरुआत से लेकर आज तक कई सितारों ने अपनी काबिलियत के दम पर फिल्म इंडस्ट्री में अपने पैर जमाए। कई बार तो नायक-नायिकाओं के पैरों के फिल्मांकन ने फिल्म इंडस्ट्री में उनके पैर जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

फिल्म में हीरो से पहले उसके पैरों की एंट्रीः फिल्म 'फूल और पत्थर' में नायक धर्मेंद्र की एंट्री छोटे-छोटे पैरों से सड़क पर चढ़ते हुए और बड़े पैरों से सड़क से उतरते हुए थी, जिसे बहुत पसंद किया गया। इसके बाद तो कई फिल्मों में पैरों का शॉट दिखाकर नायक को बच्चे से बड़ा दिखाने के प्रयोग किए गए।

पैरों ने क्रिएट किया सस्पेंस-एक्शनः देव आनंद की 'ज्वेल थीफ' में भी पांव को लेकर सस्पेंस दिखाया गया। नायिका कहती है कि नायक के पैरों में छह अंगुलियां हैं, वह पैर दिखाए। लेकिन वह टालमटोल करता है, जिससे सस्पेंस बढ़ता जाता है। बाद में नायक जिस अंदाज से मौजे उतारता है, वह दृश्य देखने लायक होता है। फिल्म 'शोले' में हाथ कटे ठाकुर (संजीव कुमार) की असमर्थता तब शौर्य में बदल जाती है, जब फिल्म के क्लाइमेक्स में वह अपने पैरों में पहने कील लगे जूतों से गब्बर सिंह (अमजद खान) को मारता है। ठाकुर के पैर की हर ठोकर पर सिनेमा हॉल तालियों और सीटियों से गूंज उठता। 'शोले' में ही गब्बर सिंह को भी चट्टान पर बेल्ट लेकर घूमते दिखाया गया, तब कैमरा उसके पैरों पर ही फोकस होता है।

शम्मी कपूर की फिल्म 'चायना टाउन' में नायक के हमशक्ल के पैरों का आकार छोटा होने से कहानी में मोड़ आता है, तो सलीम जावेद ने 'यादों की बारात' में एक नया प्रयोग किया। इसमें खलनायक अजीत के दोनों पैरों के आकार में अंतर होता है। वह एक पैर में 9 नंबर और दूसरे पैर में 10 नंबर का जूता पहनता है। फिल्म के क्लाइमेक्स में जब टेबल पर अजीत के दोनों जूते दिखाए जाते हैं, तो फिल्म के नायक धर्मेंद्र उसे पहचान लेते हैं। इसके साथ ही फिल्म का रोमांच चरम सीमा पर पहुंच जाता है।

नायिकाओं के हसीन पैरः हिंदी फिल्मों में नायिका के हसीन पैरों पर भी कई आइकॉनिक दृश्य और गीत फिल्माए गए। फिल्म 'पाकीजा' में मीना कुमारी के पैरों की खूबसूरती ने खूब करिश्मा किया। बिना चेहरा देखे, रेल की सीट पर मीना कुमारी के पैर देखकर राजकुमार एक चिट्ठी छोड़ जाते हैं, जिस पर लिखा होता है 'आपके पांव देखे, बहुत हसीन हैं, इन्हें जमीन पर मत उतारिएगा, मैले हो जाएंगे।'

याद कीजिए फिल्म 'शोले' का वो डायलॉग जिसमें गब्बर सिंह बसंती से कहता है 'जब तक तेरे पैर चलेंगे, उसकी सांस चलेगी। जब तेरे पैर रुके, तो ये बंदूक चलेगी।'

फिल्म 'मिस मेरी' में बचपन में बिछड़ी नायिका के पैरों की छह अंगुलियां, उसे अपने परिवार से मिलाती है तो 'नाचे मयूरी' में सुधा चंद्रन के नकली पैरों से नर्तकी बनने की कहानी कही गई।

जब नायिकाओं के पैरों की बात आती है, तो जाहिर है वह सुंदर तो होंगे ही। 'मेरे पांव में मेहंदी लगी है', 'आजकल पांव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे', 'पांव छू लेने दो फूलों को इनायत होगी', जैसे कितने ही मधुर और सदाबहार गीत नायिका के पैर को ध्यान में रखकर रचे गए।

पैरों से उभारी गई संवेदनाः कई फिल्मों में नायक के पैरों को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया गया, जिससे रोमांच के साथ-साथ संवेदना भी जगती है। मिसाल के तौर पर राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोस्ती' को देखा जा सकता है। एक पैर से दिव्यांग और आंख की रोशनी खो चुके व्यक्ति की दोस्ती पर आधारित इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लंबी दौड़ लगाते हुए उस समय की कई फिल्मों को पीछे छोड़ दिया था। फिल्मों में गरीबी और मजबूरी दिखाने के लिए भी निर्माताओं ने कभी नायक को, कभी नायिका को तो कभी सहनायिका या सहनायक को पैरों से दिव्यांग बनाने का फार्मूला आजमाया। 'उपकार' का मलंग, 'हीर रांझा' का एक पैर से अशक्त मामा, 'सच्चा झूठा' और 'मजबूर' की पैरों से दिव्यांग बहन ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इसी तरह फिल्म 'शान' में चलने में अक्षम अब्दुल (मजहर खान) का मुखबिर का किरदार भी काफी लोकप्रिय हुआ था। *

'शोले' में अमजद खान के साथ संजीव कुमार

'उपकार' में मलंग के किरदार में प्राण

राजकुमार के पैर और सफेद जूते

याद कीजिए फिल्मों के वे सीन, जिनमें पर्दे पर हीरो से पहले उसके सफेद जूते दिखाए जाते थे और दर्शक जान जाते थे कि अब सीन में किसकी एंट्री होने वाली है। 'हमराज' और 'वक्त' में राजकुमार की जानदार एंट्री तो आपको याद ही होगी। इन फिल्मों में जैसे ही परदे पर राजकुमार के सफेद जूते दिखाई देते, दर्शक तालियों से उनका स्वागत करते। राजकुमार खुद इस तथ्य से वाकिफ थे, वे अकसर बी.आर. चोपड़ा से मजाक में कहा करते थे, 'जानी, सुना है आजकल आप हमारे जूतों की कमाई खा रहे हैं।'